हिन्दी साहित्य का इतिहास

पूर्वपीठिका

अतीत के किसी भी तथ्य, तत्त्व एवं प्रवृत्ति के वर्णन, विवरण, विवेचन व विश्लेषण को, जो कि कालविशेष या कालक्रम की दृष्टि से किया गया हो, इतिहास कहा जा सकता है।

यद्यपि उन्नीसवीं शती से पूर्व विभिन्न कवियों और लेखकों द्वारा अनेक ऐसे ग्रंथों की रचना हो चुकी थी जिनमें हिंदी के विभिन्न कवियों के जीवनवृत्त एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है, जैसे : 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता', 'दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता', 'भक्तिमाल', 'कविमाला', 'कालिदास हजारा' आदि; किंतु इनमें कालक्रम, सन्-सवंत् आदि का अभाव होने के कारण इन्हें 'इतिहास' की संज्ञा नहीं दी जा सकती। वस्तुतः अब तक की जानकारी के अनुसार, हिंदी साहित्य के इतिहास-लेखन का सबसे पहला प्रयास एक फ्रेंच विद्वान **गार्सा द तॉसी** का ही समझा जाता है, जिन्होंने फ्रेंच भाषा में 'इस्त्वार द ला लितरेत्युर ऐन्दुई ऐ ऐन्दुस्तानी' ग्रंथ लिखा, जिसमें हिंदी और उर्दू के अनेक कवियों का विवरण वर्णक्रमानुसार दिया गया है। इसका प्रथम भाग 1839 में तथा द्वितीय 1847 ई. में प्रकाशित हुआ था।

तॉसी की परंपरा को आगे बढ़ाने का श्रेय **शिवसिंह सेंगर** को है, जिन्होंने 'शिवसिंह सरोज' (1883) में लगभग एक सहस्र भाषा-कवियों का जीवनचरित उनकी कविताओं के उदाहरण सहित प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। कवियों के जन्मकाल, रचनाकाल आदि के संकेत भी दिये गये हैं, यह दूसरी बात है कि वे संकेत बहुत विश्वसनीय नहीं हैं। इतिहास के रूप में इस ग्रंथ का भी महत्त्व अधिक नहीं है, किंतु फिर भी इसमें उस समय तक उपलब्ध हिंदी कविता संबंधी ज्ञान को संकलित कर दिया गया है।

सन् 1888 में एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की पत्रिका के विशेषांक के रूप में **जार्ज ग्रियर्सन** द्वारा रचित ' द मॉडर्न वर्नेक्युलर लिटरेचर ऑफ हिंदुस्तान' का प्रकाशन हुआ, जो नाम से 'इतिहास' न होते हुए भी सच्चे अर्थ में हिंदी साहित्य का पहला इतिहास कहा जा सकता है।

मिश्रबंधुओं द्वारा रचित 'मिश्रबंधु-विनोद' चार भागों में विभक्त है, जिसके प्रथम तीन भाग 1913 ई. में प्रकाशित हुए तथा चतुर्थ भाग 1934 ई. में प्रकाशित हुआ। मिश्रबंधुओं ने अपने ग्रंथ को 'इतिहास' की संज्ञा न देते हुए भी भरसक इस बात का यत्न किया कि यह एक आदर्श इतिहास सिद्ध हो। इसे परिपूर्ण एवं सुव्यवस्थित बनाने के लिए उन्होंने एक ओर तो इसमें लगभग पांच हजार कवियों को स्थान दिया है तथा दूसरी ओर इसे आठ से भी अधिक काल-खंडों में विभक्त किया है।

हिंदी साहित्येतिहास की परंपरा में सर्वोच्च स्थान **आचार्य रामचंद्र शुक्ल** द्वारा रचित 'हिंदी साहित्य का इतिहास' (1929) को प्राप्त है, जो मूलतः नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित 'हिंदी-शब्द-सागर' की भूमिका के रूप में लिखा गया था तथा जिसे आगे परिवर्द्धित एवं विस्तृत करके स्वतंत्र पुस्तक का रूप दे दिया गया।

वस्तुतः आचार्य शुक्ल ने इतिहास के मूल विषय को आरम्भ करने के पूर्व ही हिन्दी साहित्य के 900 वर्षों (आदिकाल से लेकर छायावादी युग तक) के इतिहास को चार सुस्पष्ट काल-खंडों में विभक्त किया जो सच्चे अर्थों में साहित्य का इतिहास प्रतीत होता है। इसके बाद उन्हीं के अनुकरण पर अनेक इतिहास ग्रंथ लिखे गए, जिनमें कुछ प्रमुख निम्नांकित हैं–

1. इस्तवार द ला लितरे-त्यूर ऐन्दुई ऐन्दुस्तानी – फ्रेंच विद्वान गार्सा दा तासी, फ्रेंच भाषा में 1839 ई॰ में प्रथमतः प्रकाशित।
2. द माडर्न वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान– जार्ज ग्रियर्सन, सन् 1888
3. मिश्रबंधु विनोद-मिश्रबंधु-प्रथम तीन भाग 1913 में चतुर्थ भाग– 1934 में
4. शिवसिंह सरोज-शिवसिंह सेंगर – 1873
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास-आ॰ रामचंद्र शुक्ल-1929 ना॰प्र॰स॰ वाराणसी
6. हिन्दी साहित्य की भूमिका–आ॰ हजारी प्रसाद द्विवेदी
7. हिन्दी साहित्य : उद्‌भव और विकास – हजारी प्रसाद द्विवेदी
8. हिन्दी साहित्य का आदिकाल – हजारी प्रसाद द्विवेदी
9. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ॰ रामकुमार वर्मा – 1938
10. हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास – नागरी प्रचारिणी सभा, 1961
11. हिन्दी साहित्य – डॉ॰ धीरेन्द्र वर्मा
12. हिन्दी साहित्य का इतिहास – सं॰ नगेन्द्र
13. राजस्थानी साहित्य की रूपरेखा–मोतीलाल मनेरिया, 1939
14. जैन इतिहास की पूर्व पीठिका तथा हमारा अभ्युत्थान् – हीरालाल जैन, 1939
15. Modern Hindi Literature–डॉ॰ इन्द्रनाथ मदान, 1939
16. A Scatch of Hindi Lit. – Adwin Greeks, 1917
17. A History of Hindi Lit. – एफ. इ. के. महोदय, 1920
18. हिन्दी भाषा और साहित्य – श्यामसुंदर दास, 1930
19. हिन्दी भाषा और उसके साहित्य का विकास – अयोध्या सिंह उपाध्याय, 1930
20. हिन्दी साहित्य का विवेचनात्मक इतिहास – सूर्यकांत शास्त्री, 1930
21. हिन्दी साहित्य का इतिहास–रमाशंकर शुक्ल रसाल, 1931
22. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास – कृष्ण शंकर शुक्ल, 1934
23. हिन्दी साहित्य का अतीत – डॉ॰ विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, 1960
24. हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास – डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, 1985
25. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास – रामस्वरूप चतुर्वेदी
26. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास – बच्चन सिंह

काल विभाजन और नामकरण

सामान्यतः इतिहास के लेखन में विद्वानों के काल विभाजन के लिए निम्नलिखित आधार रहे हैं–

1. ऐतिहासिक कालक्रम
2. शासक और उनका शासन काल
3. लोकनायक एवं उनका प्रभाव
4. साहित्यिक नेता एवं उसकी प्रभाव-परिधि

5. राष्ट्रीय, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आन्दोलन
6. साहित्यिक प्रवृत्ति

सामान्यतः काल विभाजन का आधार निम्नानुसार होना चाहिए—

1. काल विभाजन साहित्यिक प्रवृत्तियों और आदर्शों में समानता के आधार पर
2. कालों का नामकरण मूल साहित्य-चेतना को आधार मानकर साहित्यिक प्रवृत्ति के अनुसार
3. कालों का सीमांकन मूल प्रवृत्तियों के आरम्भ और अवसान के अनुसार

इस लक्ष्य को आधार मान कर हिंदी साहित्य का कालविभाजन तथा नामकरण सामान्यतः इस प्रकार किया जा सकता है:

आदिकाल : सातवीं शती के मध्य से चौदहवीं शती के मध्य तक।

भक्तिकाल : चौदहवीं शती के मध्य से सत्रहवीं शती के मध्य तक।

रीतिकाल : सत्रहवीं शती के मध्य से उन्नीसवीं शती के मध्य तक।

आधुनिक काल : उन्नीसवीं शती के मध्य से अब तक:

1. पुनर्जागरणकाल (भारतेंदुकाल) 1857–1900 ई.
2. जागरणसुधारकाल (द्विवेदीकाल) 1900–1918 ई.
3. छायावादकाल 1918–1938 ई.
4. छायावादोत्तरकाल
   (क) प्रगति-प्रयोगकाल 1938–1953 ई.
   (ख) नवलेखनकाल 1953 ई. से अब तक

आचार्य शुक्ल का काल विभाजन

हिन्दी काव्य साहित्य का प्रारम्भ सामान्यतया 11वीं शताब्दी से माना जाता है। यद्यपि इससे पूर्व भी काव्य ग्रंथों की रचना हुई थी, लेकिन अधिकांश विद्वान उन्हें अपभ्रंश की रचनायें मानते हैं, हिन्दी की नहीं। 11वीं शताब्दी से लेकर अब तक हिन्दी काव्य की धारा स्वाभाविक गति से प्रवाहमान रही है। इस सम्पूर्ण काल का व्यवस्थित व क्रमबद्ध इतिहास उपलब्ध है।

11वीं शताब्दी से अब तक की अवधि को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने चार कालों में विभाजित किया है: (1) वीरगाथा काल, (2) भक्ति काल (3) रीति काल और (4) आधुनिक काल। इनका समय इस प्रकार है:

वीरगाथा काल – (सं. 1050 से 1375 तक)

भक्ति काल – (सं. 1375 से 1700 तक)

रीति काल – (सं. 1700 से 1900 तक)

आधुनिक काल – (सं. 1900 से अब तक)

आचार्य शुक्ल ने उपरोक्त काल विभाजन, काल विशेष की रचनाओं की मुख्य प्रवृत्तियों के आधार पर किया है। किसी विशेष काल में जिस विशेष ढंग की रचनाओं की प्रचुरता रही, उसी के आधार पर उन्होंने उस काल का नामकरण किया। उदाहरण के लिए जिस काल में वीरों की गाथायें अधिक लिखी गईं, उसे उन्होंने वीरगाथा काल कहा। जिस काल में भक्ति की रचनाओं की प्रचुरता रही, उसे उन्होंने भक्ति काल का नाम दिया। इसी प्रकार जिस काल में रीति ग्रंथ अधिक लिखे गये, उस काल का नाम उन्होंने रीति काल रखा। आधुनिक विचारों, समस्याओं तथा नए अलंकारों, प्रतीकों, नए प्रयोगों और नई अभिव्यक्ति प्रणालियों से समृद्ध साहित्य वाले काल को उन्होंने आधुनिक काल की संज्ञा प्रदान की।

आदिकाल

वीरगाथा काल को आदि काल भी कहा जाता है। इस काल में भारत का राजनैतिक वातावरण अशान्त था। देश पर बाहर से आक्रमण हो रहे थे। देश के भीतर कोई शक्तिशाली केन्द्रीय सत्ता नहीं थी। अनेक छोटे-छोटे शासक थे, जिनके बीच पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेष था। वे आपस में लड़ते भी रहते थे। अतः देश की राजसत्ता निरन्तर क्षीण होती जा रही थी।

जब देश में युद्ध और संघर्ष का वातावरण हो, तो स्वाभाविक ही था कि इस काल के कवि वीर रस की कवितायें लिखते। यद्यपि इस काल की रचनाओं में वीररस की प्रधानता थी, किन्तु शृंगार रस की भी उनमें प्रचुर मात्रा थी। कवियों ने जहां किसी राजा (प्रायः अपने आश्रयदाता) की वीरता, उसके यश और शौर्य का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया है, वहीं वे राजकुमारियों के सौन्दर्य का सुन्दर अंकन करने में भी नहीं चूके हैं। अतः इस काल की कविता का सामान्य विषय है— किसी राजकुमारी के रूप पर किसी राजा का आसक्त होना; उसी राजकुमारी को लेकर दोनों पक्षों के बीच युद्ध होना। इन परिस्थितियों में कवियों को राजाओं के पराक्रम, शौर्य प्रशस्ति और राजकुमारियों के शृंगार, उनके स्वयंवर व हरण का विस्तृत एवं अतिरंजित वर्णन करने का सुअवसर मिला। अतः इस काल के कवियों की रचनायें वीर और शृंगार रस से परिपूर्ण हैं जिनमें वीर रस प्रधान है और शृंगार रस गौण है।

वीरगाथा काल की कविता युद्ध के उन्माद, खड्गों की झनकारों और विजय की हुंकारों की कविता है। अतः इसमें ओजपूर्ण शब्दावली की भरमार है।

सम्पूर्ण वीर गाथा काल की रचनाओं की गणना करना यहां आवश्यक नहीं है, किन्तु उपलब्ध साहित्य का सामान्य परिचय दिया जाता है।

इस काल की रचनायें दो रूप में मिलती हैं:— (*i*) प्रबन्ध काव्य के रूप में, और (*ii*) मुक्तक रूप में। मुक्तक रचनायें सामान्यतया वीर गीत हैं।

वीरगाथा काल का सबसे प्राचीन ग्रंथ 'खुमान रासो' है। इसका रचयिता दलपति विजय था। इस काल का सबसे प्रसिद्ध काव्य 'पृथ्वीराज रासो' है, जिसके रचनाकार चन्दबरदाई थे, जो पृथ्वीराज के समकालीन थे। पृथ्वीराज रासो में दिल्ली के शासक पृथ्वीराज चौहान की गौरवगाथा है। यह काव्य बड़ी मार्मिक और ओजपूर्ण भाषा में है।

इसमें नायक के प्रेम पक्ष और शौर्य – दोनों का बड़ा सजीव और प्रभावोत्पादक वर्णन मिलता है। इस काल की एक अन्य रचना 'आल्हा खण्ड' है। इसका लेखक जगनिक था। इस ग्रंथ में आल्हा और ऊदल की वीर-कथा का वर्णन है। यह बड़ी ओजस्वी रचना है। आजकल भी वर्षा ऋतु में देहातों में लोग बड़े उत्साह और उमंग से आल्हा गाते और सुनते हैं। नरपति नाल्ह रचित 'बीसलदेव रासो' नामक काव्य इस काल का एक अन्य प्रमुख ग्रंथ है। इसमें राजपूताना के राजा बीसलदेव की कीर्ति का वर्णन है। भट्ट केदार द्वारा लिखा गया 'जयचन्द प्रकाश' और मधुकर द्वारा रचित 'जय मयंक जस चन्द्रिका' इस काल के अन्य ग्रंथ हैं।

इस काल के अन्त के लगभग हमें दो अन्य कवियों की रचनायें मिलती हैं— अमीर खुसरो और विद्यापति। अमीर खुसरो ने पहेलियां और मुकरियां लिखी हैं और विद्यापति के शृंगार और भक्ति के गीतों का संग्रह पदावली में है। खुसरो की पहेलियों और मुकरियों में खड़ी बोली के प्रारम्भिक रूप का दर्शन होता है। विद्यापति की पदावली के गीतों पर मैथिली का प्रभाव है।

प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं विशेषताएँ

हिन्दी साहित्य का प्रथम काल जो वीरगाथा काल, आदिकाल, चारणकाल, संधिकाल आदि नामों से जाना जाता है, हिन्दी साहित्य का महत्त्वपूर्ण काल है। यह हिन्दी भाषा और हिन्दी काव्य का सूर्योदय काल है। इस काल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :–

आश्रयदाताओं की प्रशंसा : इस काल के कवियों ने अपने-अपने आश्रयदाताओं की बढ़-चढ़कर प्रशंसा की है। अपने आश्रयदाताओं को ऊँचा दिखाने के लिए इन्होंने अपनी पूरी ताकत खर्च कर दी है। स्वर्णमुद्रा के लोभ में इन कवियों ने राजाओं का झूठा यशोगान किया है। परिणामस्वरूप इस काल का साहित्य स्तुतिपरक होकर सिमट गया है।

ऐतिहासिकता का प्रभाव : इन रचनाओं में इतिहास प्रसिद्ध चरित्र नायकों को लिया गया है किन्तु उनका वर्णन ऐतिहासिक नहीं है। इनके कार्यकलापों की तिथियाँ इतिहास से मेल नहीं खातीं। इनमें इतिहास की अपेक्षा कल्पना की प्रधानता है। इनमें कवियों ने कल्पना और अतिरंजना का समिश्रण किया है।

संदिग्ध रचनाएँ : इस काल की रचनाओं की प्रामाणिकता संदिग्ध है। भाषा शैली और विषय वस्तु की दृष्टि से कई रचनाओं में व्यापक परिवर्तन मिलता है। लगता है, इन पुस्तकों में शताब्दियों तक परिवर्तन होने के कारण इनका वर्तमान स्वरूप संदिग्ध हो गया है।

युद्धों का सजीव वर्णन : इन ग्रंथों का मुख्य विषय युद्धों का वर्णन है। ये युद्ध वर्णन अत्यन्त सजीव हैं क्योंकि ये कवि राजाओं के साथ युद्ध भूमि में एक सैनिक की तरह भाग लेने वाले होते थे।

संकुचित राष्ट्रीयता : इस काल की रचनाओं में राष्ट्रीयता का पूर्ण अभाव है। इस काल के कवियों के आश्रयदाता ही उनके लिए राष्ट्र थे। राजाओं ने भी अपने सौ-पचास गाँवों को राष्ट्र समझ रखा था। यह देश का दुर्भाग्य था। राजाओं का आपसी संघर्ष ही राष्ट्रीयता के अभाव का प्रतीक है।

वीर और शृंगार रस : इन वीर गाथाओं में वीर तथा शृंगार रस का अच्छा समन्वय दिखाई पड़ता है। उस समय बालक से वृद्ध तक में युद्ध का उत्साह था। उस समय प्रचलित था–

बारह बरस तक कुकुर जीये, और तेरह तक जियै सियार।

बरस अठारह क्षत्रिय जीयै आगे जीवन को धिक्कार।।

युद्धों का कारण प्रायः सुन्दरियां होती थीं। अतः उनका नख-शिख-वर्णन करके राजाओं के मन में प्रेम जगाया जाता था। इस समय का शृंगार वासना से ऊपर नहीं उठ पाया था।

जन-जीवन के चित्रण का अभाव : इस काल के कवियों ने अपने आश्रयदाताओं की झूठी प्रशंसा में जन-जीवन को भुला दिया है।

काव्य के दो रूप : इस काल में मुक्तक तथा प्रबन्ध दोनों प्रकार की रचनाएँ मिलती हैं। जैन-साहित्य में चरित्र साहित्य, पुराण साहित्य, रामकाव्य, कृष्ण काव्य, रोमांटिक काव्य अधिक मिलते हैं। लोक-साहित्य गीति शैली में लिखे गए हैं।

विविध छन्दों का प्रयोग : छन्दों की विशेषता के लिए यह काल सर्वोपरि है। दोहा, रोला, तोटक, तोमर, आर्या आदि इस काल के प्रसिद्ध छन्द हैं। ये छन्द प्रयोग चमत्कार प्रदर्शन से युक्त हैं।

भाषा : इस काल की मुख्य भाषा 'डिंगल' भाषा है। यह भाषा उस समय राजस्थान की साहित्यिक भाषा थी। कुछ लोग इस भाषा को अपभ्रंश भाषा कहते हैं। जैन साहित्य पश्चिमी अपभ्रंश और सिद्ध साहित्य पूर्वी अपभ्रंश में लिखा गया है। वीर काव्य डिंगल-पिंगल में लिखे गए हैं। लौकिक काव्य पिंगल और खड़ी बोली की ओर उन्मुख है।

अन्तर्विरोध : आदिकाल अन्तर्विरोध, मतभेद और विभिन्नताओं का काल है। इसमें पूर्व और पश्चिम का भी भेद है। पश्चिम का साहित्य रूढ़िगत है। इसमें राजाओं की झूठी प्रशंसा है, शृंगारिकता रचनाओं में घोली गई है और मिथ्या नैतिकता का प्रचार किया गया है। पूर्व का साहित्य इसके विपरीत है। इसमें रूढ़ियों का विरोध, ब्राह्मणवाद और जातिभेद पर प्रहार है। इस काल के कवि के एक काव्य में अन्तर्विरोध खोजा जा सकता है। विद्यापति इसी काल के कवि हैं जो शैव भी हैं और वैष्णव भी। वे भक्त भी हैं और शृंगारी भी।

रासक शैली की प्रधानता : आदिकाल में जितने भी काव्य मिलते हैं उनमें अधिकांश की शैली 'रासक' शैली है। रासक गेय रूपक को कहते हैं। इन्हें ताल और लय के अनुसार नाच-नाच कर गाया जाता है। इस काल के रचना ग्रंथों में 'रासो' शब्द जुड़ा हुआ मिलता है। चन्दवरदाई, दलपति विजय, नरपतिनाल्ह, जगनिक आदि इस काल के प्रमुख कवि हैं उनकी श्रेणी में विद्यापति सर्वश्रेष्ठ हैं।

राहुल जी तथा अन्य अनेक विद्वान आदिकाल का आरम्भ सरहपा (हिन्दी के प्रथम कवि, 769 ई॰) से मानते हैं जिसे मानना उचित भी है। अपभ्रंश की साहित्यिक परम्परा पहले से ही चली आ रही थी और आदिकाल में हिन्दी के समान्तर लम्बे समय तक चलती रही। हम इस अध्याय में आदिकाल की समय-सीमा में रची गयी प्रमुख अपभ्रंश-रचनाओं का भी परिचय देंगे।

प्राकृत-/संस्कृत-/अपभ्रंश के लेखक –

1. **हेमचन्द्र (1088-1197)** – ने प्राकृत का व्याकरण 'सिद्ध हेमचन्द्र शब्दानुशासन' नाम से रचा। इसमें अपभ्रंश-रचनाओं से दोहे उद्धृत किये गये हैं। हेमचन्द्र जैन मुनि थे। इनकी अन्य रचनाएं हैं – 'कुमारपालचरित' तथा 'देशीनाम माला'।
2. **जैनाचार्य मेरूतुंग** – ने 'प्रबन्धचिन्तामणि' की रचना संस्कृत में की।
3. **सोमप्रभ सूरि** – की रचना है 'कुमारपाल प्रतिबोध'।
4. **प्राकृत पैंगलम्** – का रचनाकार अज्ञात है। इसमें प्राकृत और अपभ्रंश की स्फुट रचनाएं संग्रहित हैं। यह छंदशास्त्र संबंधी पुस्तक है। आचार्य शुक्ल ने इसमें मिले आठ छंदों के आधार पर ही 'हम्मीर रासो' के अस्तित्व का पता लगाया था तथा उसका रचयिता शार्डगंधर को बताया था। राहुल जी ने 'हम्मीर रासो' को जज्वल कवि की रचना बताया; परन्तु शुक्ल जी का मत ही सही लगता है।

अपभ्रंश साहित्य के प्रमुख कवि/रचनाएं –

वैय्याकरण ने 'अपभ्रंश भाषा' शब्द का उल्लेख किया था। आदि काल की समय सीमा में आने वाले अपभ्रंश भाषा के प्रमुख कवि नीचे दिये जा रहे हैं:

1. **कवि स्वयंभू (कर्नाटक, 783 ई॰ लगभग)** – की रचना 'पउमचरिउ' में राम के चरित्र का विस्तार से वर्णन है। इनकी अन्य कृतियां हैं – 'रिट्ठणेमि चरिउ', 'पंचमी चरिउ', 'स्वयंभू छन्द', 'हरिवंश पुराण'।

2. **पुष्पदंत** (10वीं सदी) शैव थे, बाद में जैन हो गये। इनकी रचना 'महापुराण' में 63 महापुरुषों का चरित्र है। अन्य रचनाएं हैं – 'णयकुमारचरिउ', 'जसहरचरिउ', 'हरवंशपुराण'।
3. **धनपाल** (10वीं सदी) की रचना 'भविसयत कहा' में एक वणिक की कथा में मनुष्य के हृदय की मार्मिक अभिव्यक्ति है।
4. **अद्दहमाण या अब्दुर्रहमान** की श्रृंगारिक रचना 'संदेशरासक' (खण्डकाव्य) में विक्रमपुर की एक वियोगिन की विरह कथा है।
5. **जिनदत्त सूरि** का 'उपदेशरसायन रास' एक नृत्यगीत (रासलीला) काव्य है।
6. **जोइन्दु कवि** की रचनाएं 'परमात्म प्रकाश' तथा 'योगसार' से अपभ्रंश में 'दोहा-काव्य' आरम्भ होता है।
7. **रामसिंह** (11वीं सदी) की रचना 'पाहुड दोहा' में इन्द्रियनिग्रह, त्याग एवं ज्ञान आदि की चर्चा है।
8. **कनकामर मुनि** की रचना है 'करकंडचरिउ'।
9. **विनय चन्द्र सूरि** की रचना 'नेमिनाथ चउपई' में पहली बार बारहमासा मिलता है।
10. **हरिभद्र सूरि** 'नेमिनाथ चरिउ'।

स्मरणीय है कि अपभ्रंश में रामकथा 'पउमचरिउ', 'पउचरियम्' या 'पउमपुराण' जैसे नाम वाले ग्रन्थों में कही गयी है जबकि कृष्णकथा 'हरिवंश पुराण' में।

हिन्दी साहित्य

1. **सिद्ध साहित्य :** सिद्धों की संख्या 84 बतायी जाती है जिनका समय 8वीं से 12वीं सदी तक फैला है। सिद्ध बौद्धधर्म के परवर्ती स्वरूप में वज्रयानी शाखा से सम्बन्धित थे, जिसका स्वरूप आगे गुह्य और विकृत होता चला गया। सिद्धों ने ही 'महासुखवाद' का प्रवर्तन किया।

   प्रथम सिद्ध सरहपाद हिन्दी के प्रथम कवि माने जाते हैं (राहुल जी के अनुसार)। इनके अन्य नाम हैं – सरहपा, सरोरूहपाद, सरोजवज्र। सरहपा ने सहजयान का प्रवर्तन किया। इनका समय राहुलजी ने 769 ई॰ माना है।

   सिद्धों ने नैरात्म्य भावना, कायासाधना, सहज, शून्य तथा समाधि की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं का वर्णन किया है। इन्होंने ब्राह्मणवाद, जाति-पाति तथा झूठे आचारों का तीव्र खंडन किया है।

   सिद्धों की भाषा संधा-भाषा है जिसमें प्रतीकों के माध्यम से अंतस्साधनात्मक अनुभूतियों का संकेत होता है। सिद्धों ने चर्यापद (अनुष्ठान गीत) तथा दोहे रचे हैं। अन्य प्रमुख सिद्ध हैं – कण्हपा, लुईपा, शबरपा, डोम्भिपा। (रचनाएं 'डोम्बि-गीतिका तथा अक्षरद्विकोपदेश')।

   म॰म॰ हरप्रसाद शास्त्री ने कुछ सिद्धों के चर्यागीतों और दोहाकोशों का 'बौद्धगान ओ दोहा' नाम से सन् 1917 में संपादन किया। प्रबोधचन्द्र बागची ने 'दोहाकोश' नाम से सिद्धों के दोहों को छपवाया। राहुल जी ने भी 'हिन्दी काव्यधारा' शीर्षक से चर्यापदों और दोहों का एक संकलन संपादित किया।
2. **नाथ साहित्य** – सिद्धों तथा नाथों में बहुत समानता है और केवल थोड़ा सा अन्तर। नाथ ब्रह्मचर्य और योगाभ्यास पर बल देते थे, जबकि सिद्ध कायासाधना पर। नाथों की संख्या 9 मानी जाती है। नाथ साहित्य के प्रारम्भकर्ता गोरखनाथ हैं जिनके गुरु मछंदरनाथ (मत्स्येन्द्रनाथ) एक सिद्ध थे। गोरखनाथ ने पतंजलि के योग को आधार बनाकर 'हठयोग' का प्रवर्तन किया।

   राहुल जी तथा हजारी प्रसाद द्विवेदी गोरखनाथ को दसवीं सदी का मानते हैं जबकि शुक्ल जी 13वीं सदी का। शुक्ल जी ने गोरखनाथ की दस हिन्दी पुस्तकों का उल्लेख किया है। डा॰ पीताम्बर दत्त बडथ्वाल ने गोरखनाथ की 40 रचनाएं मानी हैं। प्रमुख हैं– 'सबदी', 'पद', 'प्राणसंकली'। डा॰ बडथ्वाल ने सर्वप्रथम गोरख की बानियों का संग्रह 'गोरखबानी' (1930) नाम से छपवाया।
3. **जैन साहित्य** – जैन साहित्य मूलतः धार्मिक काव्य है, परन्तु उसमें काव्यत्व भी है। जैन साहित्य की रचना में आचार, रास, फागु, चरित आदि विभिन्न शैलियां मिलती हैं। हिन्दी में रचित जैन साहित्य की प्रमुख रचनाएं ये हैं–

   क. श्रावकाचार (933 ई॰) – एक ग्रन्थ के रूप में हिन्दी की प्रथम रचना है। इसमें 250 दोहों में 'देवसेन' ने श्रावक-धर्म का प्रतिपादन किया है। देवसेन की अन्य रचनाएं हैं – 'दब्ब–सहाव–पयास' (= द्रव्यस्वभावप्रकाश; अपभ्रंश में रचित), लघुनयचक्र, (हिन्दी) 'दर्शनसार' (हिन्दी)।

   ख. भरतेश्वर-बाहुबली रास – शालिभद्र सूरि रचित 205 छन्दों का खण्डकाव्य है। मुनि जिनविजय ने इसे जैनधर्म की रास परम्परा का पहला ग्रन्थ माना है। इसमें भरतेश्वर और बाहुबली का चरित वर्णन है।

   ग. चन्दनबाला रास – में आसुग, कवि ने चन्दनबाला का चरितवर्णन किया है। इनकी अन्य रचनाएं हैं : 'जीवदया रास'।

   घ. स्थूलिभद्र रास – में जिन धर्म सूरि ने स्थूलिभद्र और कोशा वेश्या की कथा कही है।

   ङ. रेवन्तगिरि रास – में विजयसेन सूरि ने तीर्थकंर नेमिनाथ की प्रतिमा तथा रेवंतगिरि तीर्थ का वर्णन किया है।

   च. नेमिनाथ रास – में सुमति गणि ने 58 छन्दों में नेमिनाथ का चरित वर्णन किया है।
4. **रासो-साहित्य** – 'रासो' शब्द की उत्पत्ति आचार्य शुक्ल 'रसायण' से तथा हजारी प्रसाद द्विवेदी 'रासक' से मानते हैं।

   क. खुम्माण रासो – रचयिता 'दलपति विजय'।

   ख. रणमल्ल छंद (1397 ई॰) – रचयिता 'श्रीधर'।
   (अनेक विद्वान् इसे आदिकाल में रचित न मानकर परवर्ती मानते हैं)

   ग. विजयपाल रासो – का रचयिता 'नल्ल सिंह' नामक कवि है। इसमें विजयपाल के पंग राजा से हुए युद्ध का वर्णन है। मिश्रबन्धुओं ने इसे यद्यपि 14वीं सदी की रचना कहा है लेकिन प्रायः सभी विद्वान् इसे आदिकाल से परवर्ती रचना मानते हैं।

   घ. बीसलदेव रासो – इसमें भोज परमार की पुत्री राजमती और अजमेर के चौहान राजा बीसलदेव तृतीय के विवाह, वियोग और पुनर्मिलन की कथा है। इसकी भाषा राजस्थानी हिन्दी है। रचयिता का नाम 'नरपति नाल्ह' है।

   ङ. परमाल रासो – इसे आल्ह खंड भी कहते हैं। इसके रचयिता 'जगनिक' कवि हैं। यह मौखिक परम्परा में इतना लोकप्रिय है कि

'आल्हा' लोकगीत की एक शैली बन गया है। यह पूरा का पूरा 'वीर' छन्द में है।

च. पृथ्वीराज रासो – राजस्थानी पिंगल (डिंगल मिश्रित पिंगल) शैली में लगभग 68 प्रकार के छन्दों में रचित यह ग्रन्थ हिन्दी का प्रथम महाकाव्य है। इस तरह 'चन्द' हिन्दी के प्रथम महाकवि ठहरते हैं।

5. लौकिक साहित्य –

क. ढोला-मारु-रा दूहा – कल्लोल कवि (कुशललाभ) द्वारा रचित यह ग्रन्थ शृंगारकाव्य है। कुछ लोग इसे आदि काल की समय सीमा (11वीं सदी) में रचित मानते हैं और कुछ लोग परवर्ती (भक्तिकाल में)। इसमें नरवर देश के राजकुमार ढोला (दूल्हा) और पूगल देश की राजकुमारी मारवणी के विवाहोत्तर प्रेम और विरह का मार्मिक निरुपण है। भाषा पुरानी राजस्थानी है तथा पूरी रचना दोहा, छन्द में है।

ख. बसन्त विलास – इसके रचयिता का पता नहीं चल सका है। इसमें 84 दोहों में प्रकृति और नारी पर बसन्त के मादक प्रभाव का मनोहारी चित्रण है। सर्वप्रथम 1952 में हाजी मुहम्मद स्मारक से यह रचना प्रकाशित हुई। केशवलाल हर्षदराय ध्रुव इसके प्रथम संपादक थे।

ग. 'जयचन्द प्रकाश' एवं 'जयमयंक जसचन्द्रिका' – 'जयचन्द प्रकाश' का रचयिता 'भट्ट केदार' हैं तथा 'जयमयंक जसचन्द्रिका' का रचयिता 'मधुकर' कवि। दोनों ही रचनाएं अप्राप्त हैं तथा दोनों का उल्लेख सिंघायच दयाल दास कृत 'राठौडॉ री ख्यात' में मिलता है। दोनों में पृथ्वीराज के शत्रु राजा जयचन्द की महिमा का वर्णन है।

घ. खड़ी बोली हिन्दी के प्रथम कवि 'अमीर खुसरो' (1253-1325) – खुसरो के गुरु ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया थे। अमीर खुसरो ने फारसी और खड़ी बोली दोनों में प्रभूत मात्रा में रचना की है। इनके ग्रन्थों में 'खालिकबारी', 'पहेलिया', 'मुकरिया', 'गज़ल' एवं 'दो सुखने' प्रसिद्ध हैं।

ङ. मैथिल कोकिल 'विद्यापति (1360-1448) – विद्यापति का जन्म मिथिला के जिला दरभंगा (ग्राम बिसफी) में हुआ था। तिरहुत के राजा शिवसिंह के आश्रय में यह रहे। विद्यापति ने जयदेव (प. बंगाल) तथा चण्डीदास (बंगाल) की परम्परा में राधा-कृष्ण प्रेम की सरस अवतारणा की। उन्होंने संस्कृत, अपभ्रंश और मैथिली तीनों में रचना की है।

संस्कृत – शैवसर्वस्वसार, गंगावाक्यावली, भूपरिक्रमा, पुरुष परीक्षा, विभागसार, गोरक्षविजय नाटक आदि।

देशभाषा मिश्रित अपभ्रंश – कीर्तिलता, कीर्तिपताका

मैथिली – पदावली, लिखनावली।

6. गद्य साहित्य –

क. राउलवेल – यह शिलांकित कृति है। इसके रचयिता 'रोडा' नामक कवि माने जाते हैं। यह चम्पूकाव्य की प्राचीनतम हिन्दी कृति है। इसमें राउल नायिका का नखशिख-सौन्दर्य-वर्णन किया गया है। यह हिन्दी का पहला नख-शिख वर्णन का काव्य है। इसका पाठ बम्बई के प्रिंस ऑफ वेल्स संग्रहालय से उपलब्ध कराकर प्रकाशित कराया गया है। भाषा अपभ्रंश है।

ख. उक्तिव्यक्ति प्रकरण – का रचयिता 'दामोदर भट्ट' है। सुनीति कुमार चटर्जी ने इसकी भाषा को प्राचीन कोसली (अवधी) कहा है।

ग. वर्णरत्नाकर – यह मैथिली की पहली गद्य रचना है। इसके लेखक ज्योतिरीश्वर ठाकुर हैं। यह ग्रन्थ आठ कल्लोलों (अध्यायों) में विभक्त है।

भक्तिकाल

वीरगाथा काल समाप्त होते-होते भारत पर विदेशी प्रभुत्व स्थापित हो चुका था। भारतीय पराधीन हो गए थे; लोगों को अनेक प्रकार के अपमान सहने पड़े। निराशा और हताशा की अवस्था में प्रभु का स्मरण और अवलम्ब स्वाभाविक था। अतः धर्म आन्दोलन आरम्भ हुए और भक्ति-भावनाओं से पूर्ण कविताएं लिखी गईं। कुछ कवियों ने इस काल में ऐसी कविताएं लिखीं; जिससे हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच द्वेष की भावना समाप्त हो जाये और वे परस्पर मिलजुल कर रहने लगें। इन कवियों ने संकुचित धार्मिक दृष्टिकोण की निन्दा की; आडम्बर, ढोंग और दिखावे की कटु आलोचना की और यह बताने का प्रयास किया कि सब मनुष्य उसी परमात्मा की सन्तान हैं। उनका आशय था कि जाति-पाति और धर्म का भेद निरर्थक है। उन्होंने एकेश्वरवाद और संसार की नश्वरता का संदेश दिया।

भक्ति काल में लिखे गये काव्य को मोटे तौर पर दो भागों में बांटा गया है–(1) निर्गुण भक्ति काव्य और (2) सगुण भक्ति काव्य। इसी आधार पर इस काल के कवियों को भी हम निर्गुण धारा और सगुण धारा वाले कवियों में बांट सकते हैं। भक्ति काल की कविता का मुख्य विषय ईश्वर की आराधना और भक्ति था। ईश्वर के निर्गुण रूप की आराधना करने वाले निर्गुण धारा के और सगुण रूप की आराधना करने वाले सगुण धारा के कवि कहलाये।

निर्गुण धारा के कवियों में कबीर, नानक, सुन्दरदास, मलूकदास, रज्जब, जायसी, कुतबन और मंझन आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। सगुण भक्ति धारा के कवियों में सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई, नंददास, रसखान, ध्रुवदास आदि के नाम प्रमुख हैं।

प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं विशेषताएँ

हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल को कुछ लोग पूर्व मध्यकाल और कुछ लोग उत्तर मध्यकाल या धार्मिक काल कहते हैं। भक्ति काल में विभिन्न परिस्थितियों पर नजर डालने की आवश्यकता है–

राजनीतिक परिस्थिति : मुहम्मद गोरी के आक्रमण के बाद से ही उत्तरी भारत का शासन मुसलमानों के हाथ में जा चुका था। मुसलमान शासकों की शासन पद्धति इस्लाम के सिद्धान्त पर आधारित थी। उसका शासन सामन्ती था। हिन्दू शासक कमजोर हो गए थे। हिन्दू शासकों में मुसलमान शासकों के विरुद्ध सिर उठाने की शक्ति नहीं रह गई थी। हिन्दुओं की आँखों के समक्ष उनके मंदिर गिराए जा रहे थे। उनके धार्मिक ग्रंथों की होली जलाई जा रही थी। फलतः इस्लामी राजनीति से पीड़ित और लांक्षित हिन्दुत्व किसी अजेय शक्ति का आश्रय ढूँढ रहा था।

सामाजिक परिस्थिति : मुसलमानों के प्रवेश और उनके द्वारा राजसत्ता हस्तगत कर लेने के परिणामस्वरूप इस्लाम की पताका फहराने लगी। हिन्दू अपने ही घर में विदेशी बन बैठे और मुसलमान विदेशी होकर हिन्दुस्तानी का गौरव प्राप्त कर लिए। हिन्दू-समाज के रक्त से इनकी आमोद-प्रमोद और वैभव-विलास की वाटिका सिंचित की गई। इस्लाम ने अपना द्वार खोल दिया था। जातियों, उपजातियों एवं नाना प्रकार के वर्गों में विभाजित हिन्दू जाति अपने ही पैरों में कुल्हाड़ी मारकर अपना गला घोंट रही थी।

धार्मिक परिस्थिति : धर्म के क्षेत्र में उन लोगों का प्रभुत्व था जो इस देश के जन-जीवन को राहु बनकर ग्रास बना लेना चाहते थे। धर्म की वास्तविक आत्मा समाप्त हो गई थी। व्यभिचार, जादू टोना, मंत्र का जाल फैलाकर हिन्दू धर्म को पतन की कीचड़ में डाल दिया गया था। रूढ़िवादियों एवं परम्परा के अंधभक्तों ने समाज की धर्म रूपी नौका को मझधार में छोड़ दिया गया था। धर्म ने जिनके ऊपर अपनी रक्षा का भार छोड़ दिया था वे ही धर्म को भ्रष्ट करने लगे थे।

साहित्यिक परिस्थितियाँ : जिन धार्मिक सम्प्रदायों ने संत काव्य की दार्शनिक पृष्ठभूमि तैयार की उन सम्प्रदायों की साहित्यिक प्रवृत्तियों का सन्त काव्य में स्वतः समावेश हो गया। भक्तिकाल की काव्यगत विशेषताओं को नीचे की सूची से समझा जा सकता है –

भक्ति काल की काव्यगत विशेषताएँ

काव्य-धारा	प्रमुख-कवि	विशेषताएँ
ज्ञानाश्रयी या ज्ञान मार्गी	कबीर	निर्गुण ब्रह्म की उपासना
शाखा (सन्त सम्प्रदाय)	धर्मदास	ईश्वर-प्राप्ति हेतु सद्गुरु आवश्यक
	रैदास	प्रायःकवि निम्न जाति के थे और जाति-पाँति का बन्धन नहीं मानते थे।
	गुरु नानक	रूढ़िवादिता, आडम्बर आदि का विरोध
	दादू दयाल	इस्लाम और वैदिक धर्म के समन्वय पर जोर
	सुन्दरदास	भक्ति और साधना की सफल अभिव्यक्ति परन्तु, काव्य शास्त्र के नियमों का निर्वाह नहीं।
	मलूक दास	वैयक्तिक साधनों पर जोर।
प्रेमाश्रयी या प्रेममार्गी	जायसी	लौकिकता के माध्यम से अलौकिकता का वर्णन
शाखा (सूफी सम्प्रदाय)	कुतुबन	भौतिक प्रेम कथाओं द्वारा ईश्वरीय प्रेम का चित्रण
	मंझन	गुरु का सर्वाधिक महत्त्व, फारसी की मसनवी शैली का प्रयोग, सम्पूर्ण जगत् एक ही ब्रह्म की अभिव्यक्ति है, जीव पति है और परमात्मा पत्नी।
राम-भक्ति शाखा	तुलसी	लोकहित पर सर्वाधिक जोर
	नामदास्	समन्वय की भावना, हिन्दू जाति को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास, कल्याण की भावना, कला पक्ष और भावपक्ष का उत्कृष्ट रूप
कृष्ण-भक्ति शाखा	सूरदास, नन्ददास परमानन्द दास कृष्णदास कुम्भनदास	ब्रज भाषा का उत्कृष्ट रूप, मधुरता, सरसता एवं रसात्मकता की सफल व्यंजना, शृंगार और वात्सल्य रस का वर्णन, कहीं-कहीं शृंगार का घोर वर्णन, राम-काव्य के समान यह हमारे सामने उच्च आदर्श नहीं रखता, लोक और शास्त्र-मर्यादा का बन्धन अस्वीकार।

भक्तिकाल (हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग)

हिन्दी साहित्य के चार कालों में केवल भक्तिकाल को ही अपने सामाजिक, नैतिक, साहित्यिक मान्यताओं के कारण स्वर्णकाल कहा जा सकता है। आदिकाल में आश्रयदाताओं का प्रशस्ति गान हुआ है। युद्धों के भयानक नाद, तलवारों की झनझनाहट तथा तीरों की सनसनाहट के स्वर इस युग में तीव्र रहे हैं। इस युग का साहित्य केवल वीर तथा शृंगार रस तक सीमित है। हिन्दी का रीतिकाल वासना तथा विलासिता का कुंज है। आधुनिक काल साहित्यिक उपलब्धियों के होते हुए भी अपनी प्रवृत्तियों में नित्य परिवर्तनशील है। जबकि भक्तिकाल के साहित्य का उद्देश्य सर्व उत्थान है। तुलसी ने लिखा है–

"कीरति भनिति भूति भलि सोई,
सुरसरि सम सब कर हित होई।"

आचार्य द्विवेदी के शब्दों में समूचे भारतीय इतिहास में भक्ति काल का साहित्य अपने ढंग का अकेला साहित्य है। इसी का नाम भक्ति-साहित्य है। यहाँ जीवन के सभी विषाद, निराशाएँ तथा कुंठाएँ मिट जाती हैं। इसमें निमज्जन करने से भारतीय जनता को अलौकिक सुख और शांति मिलती है। यह सुख, शांति अन्य किसी कारण में सम्भव नहीं।

भक्तिकाल की ईश्वरोपासना, सगुणात्मक तथा निर्गुणात्मक दोनों प्रकार की है। यह भिन्नता केवल साधन की दृष्टि से है। मध्यकालीन भक्ति धारा हठयोग के रूप में कबीर आदि सन्तों की वाणी में प्रकट हुई है। दूसरी धारा

जयदेव तथा विद्यापति के माध्यम से मधुर पदों में व्यक्त हुई है। तीसरी धारा राम तथा श्रीकृष्ण की सगुण भक्ति के रूप में प्रकट हुई है। इसमें ज्ञान, कर्म और भक्ति की त्रिवेणी बहती है। भक्ति साहित्य में हृदय, मस्तिष्क भाव और विवेक का ऐसा मणिकांचन संयोग हुआ है कि पाठक को बार-बार कहना पड़ता है–'गिरा अनयन नयन बिनु वानी।'

इस समय के काव्य का सौंदर्य तथा धार्मिक भावुकता हृदय को आनंदित करते हैं। यह गौरव अन्य किसी काल को प्राप्त नहीं है। निर्विवाद है कि भक्ति काल का साहित्य जहाँ एक ओर उच्चतम धर्म की व्याख्या करता है वहीं उच्चतम काव्यों के भी दर्शन कराता है। इसमें आत्माभिव्यक्ति है, इस काव्य का जीवन स्रोत रसपूर्ण और कलेवर मानवीय है।

भक्तिकाल की महत्ता अन्य कालों में इसलिए भी बढ़ जाती है क्योंकि इसमें समन्वय की विराट् चेष्टा मिलती है। भाव, काव्य, सगुण-निर्गुण, काव्यरूप, भाषा रूप आदि सभी दृष्टियों से समन्वय की भावना दिखाई पड़ती है। भारतीय संस्कृति केवल भक्ति काल से ही सुरक्षित है। भारतीय संस्कृति की चर्चा करके इन कवियों ने लोक आदर्श का सुन्दर चित्र प्रस्तुत किया है।

इस प्रकार काव्य रूप, लोकप्रियता, संगीतात्मकता, रचना, शैली, आध्यात्मिकता आदि तत्त्वों के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि भक्ति काल ही हिन्दी साहित्य का स्वर्णकाल या स्वर्ण युग कहलाने का वास्तविक अधिकारी है।

निर्गुण धारा

निर्गुण धारा के कवियों ने ईश्वर के निर्गुण रूप की उपासना की और साथ ही आडम्बर, ढोंग और दिखावे की कटु निन्दा की। उन्होंने जाति-पांति और धर्म के भेदभाव की भी आलोचना की। इस धारा के कवियों को दो श्रेणियों में बांटा जा सकता है : ज्ञानमार्गी और प्रेममार्गी। ज्ञानमार्गी कवि ईश्वर को ज्ञान के आधार पर जानना चाहते थे, जबकि प्रेममार्गी कवि प्रेम के माध्यम से ईश्वर को प्राप्त करने का प्रयत्न करते थे। ज्ञानमार्गी कवियों में कबीरदास सर्वप्रमुख थे। इनके अतिरिक्त नानक, सुन्दरदास, मलूकदास, रैदास, दादूदयाल और रज्जब भी इसी कोटि में आते हैं। इन कवियों को संत कवि कहा जाता है। अधिकांश संत कवि निम्नवर्ग में उत्पन्न हुए थे और उन्होंने जाति-पांति के भेदभाव, धार्मिक पाखंड, आडम्बर, अन्ध-विश्वास, कर्मकाण्ड और रुढ़िवाद की आलोचना की। प्रेममार्गी कवियों में सर्वप्रमुख मलिक मुहम्मद जायसी हैं। उनके अतिरिक्त कुतबन, मंझन और उसमान भी इसी श्रेणी के कवि थे। प्रेममार्गी कवियों का कहना था कि ईश्वर प्रेमस्वरूप है। इन कवियों पर सूफी सम्प्रदाय का बहुत प्रभाव था। अतः इन्होंने हृदय-पक्ष का सहारा लेकर 'प्रेम की पीर' को अभिव्यक्ति प्रदान की। प्रेममार्गी कवियों ने प्रतीक और रूपक के माध्यम से आत्मा को पति या प्रियतम और परमात्मा को पत्नी या प्रियतमा के रूप में मानकर भक्ति का प्रतिपादन किया।

ज्ञानमार्गी कवियों की रचनायें दोहों और पदों में हैं। इनमें ज्ञान, साधना, एकेश्वरवाद, संसार की निस्सारता आदि विषयों का रोचक निरूपण हैं कबीरदास की कवितायें 'बीजक' में संग्रहीत हैं। सन्तों की भाषा खिचड़ी या सधुक्कड़ी है। इनकी रचनाओं में भाव पक्ष प्रधान है और कला पक्ष गौण है।

प्रेममार्गी कवियों ने हृदय पक्ष का सहारा लेकर प्रेम का संदेश दिया। मलिक मुहम्मद जायसी का काव्य 'पद्मावत' प्रेम के सर्वव्यापक रूप तथा मधुर भावना की रहस्यात्मक कविता का उत्कृष्ट उदाहरण है। कुतबन की 'मृगावती' और मंझन की 'मधुमालती' भी प्रेम-मार्ग का प्रतिपादन करती हैं।

प्रेममार्गी कवियों ने दोहा और चौपाई में प्रबंध काव्य लिखे। उन्होंने ठेठ अवधी भाषा का प्रयोग किया।

संत काव्य

प्रवर्तक : कबीरदास (1397 – 1518 ई॰)

आचार्य रामानन्द : भक्तमाल के अनुसार यह आचार्य रामानुज की शिष्य-परम्परा में चतुर्थ शिष्य थे। इनके दीक्षा गुरु स्वामी राघवानन्द हैं। भक्तमाल में रामानन्दजी के बारह शिष्य गिनाये गये हैं। अनंतानंद, सुखानंद, सुरसुरानन्द, नरहर्यानन्द, भावानन्द, पीपा, कबीर, सेन, धन्ना, रैदास, पद्मावती और सुरसरी।

''अनंतानंद, कबीर, सुखा, सुरसुरा, पदमावति, नरहरि।
पीपा, भवानन्द, रैदास, धना, सेन, सुरसर की घरहरि।।''

– भक्तमाल

रामानन्द जी ने रामावत सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया, जो आगे चलकर श्री सम्प्रदाय से मिलकर एक जैसा हो गया। वस्तुतः दोनों में अन्तर है – श्री सम्प्रदाय के आराध्य नारायण (विष्णु) हैं। जबकि रामावत सम्प्रदाय के राम। इस सम्प्रदाय का मूलमंत्र 'राम' या सीताराम' है। रामानन्द जी के संस्कृत ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं – 'वैष्णव मतादभास्कर' तथा 'श्री रामार्चन पद्धति'। इस शाखा का नामकरण विभिन्न विद्वानों ने इस प्रकार किया है। निर्गुण ज्ञानाश्रयी (रामचन्द्र शुक्ल), निर्गुण भक्तिधारा साहित्य (हजारी प्रसाद द्विवेदी) संतकाव्य परम्परा (डा॰ रामकुमार वर्मा) संत काव्य धारा के आरम्भिक कवि हैं – नामदेव, त्रिलोचन, सदना, बेनी, धन्ना, पीपा, सेन तथा रैदास

नामदेव के अनेक पद हिन्दी में हैं। मराठी में अनेक अभंग प्रसिद्ध हैं।

सूफी काव्य

सूफी काव्यधारा के प्रवर्तक – मुल्ला दाउद (रचना चन्दायन)

परिचय : हमारे यहां लोक में प्रेमकथाओं के कहने की लंबी परम्परा मिलती है। कालिदास ने भी मेघदूत में 'उदयनकथाकोविद ग्रामवृद्धों' का जिक्र किया है। जिस तरह आदिकाल में जैन कवियों ने इन्हें साम्प्रदायिक रंग में रंगकर 'भविस्सयत्त कहा' जैसी रचनाएं की, उसी तरह भक्तिकाल में सूफी कवियों ने लोकप्रचलित कथाओं को सूफी ढाँचों में कसा हो ऐसा नही है। सूफी काव्य के समान्तर लौकिक-प्रेम काव्य भी रचे जाते रहे। इनमें ईश्वर दास की सत्यवती कथा, ढोला मारू रा दूहा, माधवानल-कामकंदला (कुशललाभ और आलम) सारंगा सदावृक्ष पर लिखी गयी प्रेमकाव्य रचनाएं गिनी जा सकती हैं।

सूफी रचनाएं प्रतीकात्मक हैं तथा दोहरा अर्थ (लौकिक के साथ अलौकिक के साथ भी संकेत) देने लगती है। चंदायन पहली सूफी रचना है। सभी भारतीय प्रेमाख्यानों एवं सूफी काव्यों में कथानक रूढ़ियों का प्रायः प्रयोग किया गया है। कथानक रूढ़ि से तात्पर्य किसी ऐसी घटना प्रसंगादि से है जो एक बार प्रयोग में आने के बाद परवर्ती प्रेमाख्यानों में बार-बार दोहराई जाती है तथा इस तरह रूढिगत हो जाती है। जैसे नायक और नायिका का पहली बार किसी मंदिर या फुलवारी में मिलन।

सूफीकाव्य परम्परा : इस्लाम धर्म में शरा (सनातनी) और बेशरा (मस्तमौला फकीर) दो कोटियां हैं। बेशरा साधक मलामती कहलाते हैं। भारतीय सूफी पुष्पतः बेशरा सम्प्रदाय के हैं। इनके प्रमुख उप सम्प्रदाय हैं – चिश्ती, कादिरी, सुहरावर्दी, नक्शावंदी और सत्तारी। 'सूफी' शब्द की व्युत्पति जिन विभिन्न शब्दों से की गयी है, वे हैं – 'सुफ्फा (चबूतरा)' 'सफ्फ (अगली पंक्ति)', 'सफा (पवित्र जीवन बिताने वाला साधु)', सोफिस्त (ज्ञानी)', सूफा (अरबों की जाति विशेष)', 'सुफ्फाह (भक्त विशेष)', 'सूफ (सादा ऊन)'।

इस 'सूफ (सादा ऊन)' शब्द पर अधिकांश विद्वान आज असहमत हैं तथा 'इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' एवं 'इनसाइक्लोपीडिय आव इस्लाम' में भी इसी की पुष्टि है। सूफी मत का आदि स्रोत शायी मत में मिलता है। सूफियों का प्रमुख तत्त्व प्रेम यहीं से आया है इसके अतिरिक्त सूफी मत के विकास में मानी मत तथा प्लेटिनस के चिन्तन का भी प्रभाव पड़ा है। सूफी मत का प्रभाव भक्तिकाल की प्रायः सभी धाराओं पर कुछ न कुछ पड़ा है। पर प्रेमाख्यानक काव्यधारा पर यह सर्वाधिक है। सूफी मत का अपना विश्व तत्व ज्ञान है किन्तु कथा प्रबंधन में तत्व ज्ञान का आग्रह घुलमिल गया है। इन्होंने परम-सत्ता के मधुर दाम्पत्य-भाव ही जोड़ा है, अन्य कोई भाव नहीं। संसार में उसी की प्रतिछवि हैं यह प्रतिछवि में उसका प्रतीक है। सूफह इस प्रतीक को प्रतीकार्य (परम-सत्ता) का साधन मानते हैं। इसलिए उनके यहां प्रेम और उसमें भी विरह की प्रधानता है। सूफी 'प्रेम की पीर' के कवि कहे जाते हैं। इन्होंने प्रबंधकाव्य ही लिखे हैं। अवधी भाषा में दोहा-चौपाई में कड़वक बद्ध हैं। केवल 'अनुराग बांसुरी' में दोहे की जगह बैरवे का प्रयोग है। सूफी प्रबंधकाव्य मसनवी-शैली में रचित है। अर्थात सर्गबद्ध नहीं है, काव्य को घटनाओं के शीर्षक में विभाजित किया गया है।

चाहे शुद्धरूप से लौकिक प्रेमाख्यान हों या सूफी काव्य, दोनों ही काव्यरूप की दृष्टि से प्राकृत अपभ्रंश परम्परा के रोमांचक आख्यानों से जुड़े हैं। मध्यकालीन प्रेमाख्यानों/कथाकाव्यों की यह परम्परा हमें प्रारम्भ से ही मिलती है। ऋग्वेद के उर्वशी-पुरूरवा आख्यान से यह परम्परा शुरू होती है, परन्तु महाभारत से उसका अविच्छिन्न क्रम मिलता है। संस्कृत में वासवदत्ता (सुबन्ध), कादम्बरी (बाण), दशकुमारचरित (दण्डी), नल दमयन्ती प्रसंग (महाभारत), अन्य पुराणों के आख्यान तथा जैन कवियों के प्राकृत एवं अपभ्रंश में अनेक चरितकाव्य मिलते हैं। हिन्दी प्रेमाख्यान परम्परा की पहली कृति चन्दायन मानी जाती है, परन्तु कुछ विद्वानों ने अलग मत भी दिया है–

कृति	मानने वाले आलोचक
मृगावती (कुतुबन)	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
सत्यवती कथा (ईश्वरदास)	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
हंसावली (असाइत)	मोतीलाल मेनारिया
चन्दायन (मुल्ला दाऊद)	रामकुमार वर्मा

कालक्रम से इनका क्रम इस प्रकार है – हंसावली, चन्दायन, सत्यवती कथा तथा मृगावती। हंसावली की भाषा राजस्थानी हिन्दी है, परन्तु गुजराती विद्वान इसे शुद्ध रूप से गुजराती मानते हैं। आजकल प्रायः सभी आलोचक सूफी काव्यधारा की पहली कृति चन्दायन को ही मानते हैं।

सगुण धारा

सगुण धारा के कवियों ने ईश्वर के सगुण रूप की उपासना की और उसके लोकरंजक, लोकरक्षक और लोकलायक रूप को प्रतिष्ठित किया। चूंकि निर्गुण भक्ति दुरुह और भारतीय अवतारवाद की भावना से परे थी, अतः वह अधिक लोकप्रिय न हो सकी। सगुण धारा के कवियों ने कृष्ण और राम की सगुण भक्ति की महिमा गाई और उनकी लीला का वर्णन किया। सूर, तुलसी, मीरा, नंददास, रसखान आदि इस धारा के प्रमुख कवि हैं।

सगुण भक्ति धारा के कवियों को भी दो भागों में बांटा जा सकता है–(1) कृष्ण भक्ति शाखा और (2) रामभक्ति शाखा। कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुख कवि सूरदास थे। उनके अतिरिक्त मीरा, नंददास और रसखान भी इस शाखा के उल्लेखनीय कवि हैं। कृष्ण भक्ति का सर्वांगसुन्दर रूप हमें सूरदास के 'सूर सागर' में मिलता है। सूरदास की भक्ति सख्य-भाव की भक्ति है। उन्होंने अपने आराध्यदेव श्रीकृष्ण की भक्ति, उनके सौन्दर्य और शील का मान किया। भक्ति, शृंगार और वात्सल्य का जितना हृदयग्राही वर्णन हमें सूरदास की रचनाओं में मिलता है, उतना अन्यत्र नहीं मिलता। भक्ति भावना की दृष्टि से मीरा भक्त कवियों में सर्वश्रेष्ठ हैं। मीरा ने भगवान कृष्ण को अपना पति मानकर उनकी भक्ति की। नंददास और रसखान ने भी अपनी लेखनी से कृष्ण-भक्ति की मधुर धारा बहाई।

रामभक्ति शाखा के अग्रणी कवि तुलसीदास हैं। उनका सर्वोत्कृष्ट ग्रंथ 'रामचरितमानस' है। इसके अतिरिक्त विनयपत्रिका, कवितावली, गीतावली आदि उनके उल्लेखनीय ग्रंथ हैं। तुलसी ने रामचरितमानस में ज्ञान-कर्म समन्वित भक्ति मार्ग की स्थापना की है। तुलसी की भक्ति सेवक भाव की भक्ति है। उन्होंने राम के लोकरक्षक, लोकरंजक एवं मर्यादापूर्ण जीवन का अनुपम चित्रण किया है।

सूरदास ने कृष्णलीला, गोपियों के वियोग, उद्धव संदेश और भक्ति भाव के अन्य पद लिखे। तुलसीदास का अवधी और ब्रजभाषा दोनों पर समान रूप से अधिकार था। उन्होंने श्री रामचरितमानस अवधी में लिखा। उनके अनेक पद ब्रजभाषा में हैं।

सगुण भक्ति काव्य

रामकाव्य : (आचार्य रामानुज, आलवार संत, रामानन्द, तुलसी तथा अन्य, प्राकृत-अपभ्रंश में राम काव्य परम्परा, हिन्दी रामकाव्य)

कृष्णकाव्य : (निम्बार्क, वल्लभ, हितहरिवंश, चैतन्य, सूर तथा अन्य कवि, विभिन्न सम्प्र॰ प्राकृत अपभ्रंश तथा हिन्दी कृष्णकाव्य)

मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन : मध्यकालीन भक्ति आन्दोलन अखिल भारतीय था। इसकी सबसे बड़ी देन यही रही कि प्राकृत अपभ्रंश की परम्परा से पूरी तरह पल्ला छूटा तथा देश भाषाएं स्थापित हुई। भक्तिकालीन हिन्दी काव्य की प्रमुख भाषा ब्रजभाषा है जो ब्रजभूमि के बाहर भी काव्यभाषा के रूप में स्वीकृत हुई। इसीलिए भिरणीरीदास ने बाद में कहा है - 'ब्रजभाषा हेतु ब्रजभास ही न अनुमानौ।' बंगाल-असम से ब्रजभाषा प्रभावित बंगला-असमियां को 'ब्रजबुलि' कहा गया। भक्तिकाल की दूसरी भाषा अवधी है। भक्ति साहित्य अनेक विधाओं और छंदों में रचा गया है। गेय पद और दोहा-चौपाई में निबद्ध कडवक उसके प्रधान रचना रूप है। गेयपदों की परम्परा हिन्दी में सिद्धों से शुरू होती है। कडवक की परम्परा भी सरहपा से मिलने लगती है, किन्तु सरहपा ने कोई प्रबन्ध काव्य नहीं लिखा। अवधी में प्रबंधकाव्यों की परम्परा मिलती है - भीमकवि का 'दंगवै पुराण', सूरज की 'एकादशी कथा', पुरूषोत्तम का 'जैमिनी पुराण', ईश्वर दास की 'सत्यवती कथा', जायसी का 'पद्मावत', तुलसी का 'रामचरित मानस', आदि।

दोहे की परम्परा अपभ्रंश में मिलने लगती है। सरहपा का 'दोहाकोश' प्रसिद्ध है। दोहा नाम से आदिकाल में 'ढोला मारू रा दूहा' जैसा प्रबन्धकाव्य भी मिलता है। कबीर ने 'साखी' तथा तुलसी ने 'दोहावाली' दोहा छंद में लिखी। दोहे का ही एक रूप सोरठा है।

छप्पय, सवैया, कवित्त, भुजंग प्रभात, बैरवे, हरिगीतिका आदि भक्तिकाव्य के बहुप्रयुक्त छन्द हैं। सवैया, कवित्त हिन्दी के अपने (जातीय) छंद हैं जो भक्तिकाल में मिलते हैं, इनकी स्पष्ट परम्परा पहले नहीं मिलती। तुलसी ने नहछू, कलेऊ, सोहर, मंगलकाव्य जैसे काव्यरूपों का भी उपयोग किया है। मध्यकालीन भक्ति आन्दोलनों के अन्तर्गत सगुण और निर्गुण दोनों धाराएं आती हैं। हम यहां सगुण काव्यधारा की साम्प्रदायिक पृष्ठभूमि की संक्षिप्त चर्चा करेंगे।

धार्मिक पृष्ठभूमि : हिन्दू धर्म के अन्तर्गत शैव, शाक्त, सौर स्मार्त्त और गणपत्य की गणना की जाती थी। शैव धर्म के अन्तर्गत मध्यकाल में पाशुपत, वीरशैव, लिंगायत, कश्मीरी सम्प्र॰ विख्यात थे। वैष्णव धर्म के भागवत सम्प्रदाय से सगुण भक्तिकाव्य का सूत्रपात हुआ। वैष्णव धर्म के उपसम्प्रदायों में रावत, शास्तापूजक, धर्मठाकुर, सहजिया, सत्यपीर।

भागवत धर्म के प्रतिपादक तीन प्रमुख सम्प्रदाय हैं – नारायणी, सात्वत तथा पांचरात्र। भागवत धर्म अत्यन्त प्राचीन है। इसने विष्णु तथा वासुदेव में एक्य स्थापित किया। इसके पश्चात् सात्वत धर्म का स्थान आता है जिसके प्रवर्तक वासुदेव ही माने जाते हैं। 'वासुदेव' तथा 'सात्वत' शब्द पर्याय रूप में भी उपलब्ध हैं। उपर्युक्त दोनों के बाद 'पांचरात्र' धर्म का स्थान आता है। जो अधिक व्यापक शास्त्रीय आधार रखता है। 'पांचरात्र' शब्द में 'रात्र' का अर्थ है 'ज्ञान'। पंचवधि ज्ञान-वचन (परमत्व, मुक्ति, भुक्ति, योग, विषय या संसार) को पांचरात्र माना जाता है तथा उनके समवेत ग्रहण को पांचरात्र धर्म कहते हैं। भागवत धर्म में नवधा भक्ति मान्य हैं –

''श्रवणं, कीर्तनं, विष्णो स्मरणां, पादसेवनम्।
अर्चनं, वंदनं, दास्यम्, सख्यम्, आत्मनिवेदनम्।।''

नवधा भक्ति कहलाती है। मध्यकाल में प्रेम को भक्ति माना गया।

राम काव्य

राम को अवतार मानकर उनकी उपासना का सूत्रपात कब से हुआ यह बताना कठिन है, परन्तु जहां तक रामभक्ति के साम्प्रदायिक स्वरूप का प्रश्न है, वह आठवीं शताब्दी के पश्चात् प्रारम्भ हुआ। गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद उत्तर भारत में भागवत धर्म का ह्रास होने लगा। वैष्णव साधना का गढ़ उत्तर भारत से दक्षिण में चला गया। जहां अलवारों ने रामभक्ति को अक्षुण्ण बनाए रखा। अलवारों का समय 800 ई॰- 1100 ई॰ के आसपास तक है। रंगनाथ मुनि (824-924 ई॰) ने इनके पदों का 'प्रबन्धम्' शीर्षक से संग्रह किया। 1100-1400 ई॰ में रंगनाथ मुनि (श्री सम्प्र॰) के परवर्ती आचार्यों पुण्डरीकाक्ष, रामानुज तथा राघवानन्द आदि का युग आता है, जिन्होंने रामभक्ति के दार्शनिक आधार को प्रतिष्ठित किया। चौदहवीं सदी के आरम्भ में रामानन्द ने भक्ति का पुनः उत्तर में प्रचार किया।

हिन्दी रामकाव्य परम्परा : हिन्दी रामकाव्य परम्परा में कुछ जैन कवियों की रचनाएं प्रारम्भ में आती हैं। रावण-मन्दोदरी संवाद (मुनि लावण्य), रामचरित या रामरास (ब्रह्मनिदास), हनुमन्तरास (ब्रह्मजिनदास), हनुमन्तगामी कथा (ग्रह्मराममल्ल), हनुमान चरित (सुन्दरदास)।

रामकाव्य की विशेषताएं

राम का स्वरूप : राम-भक्ति-काव्य-धारा के कवियों ने राम को विष्णु का अवतार और ब्रह्म का स्वरूप माना है। इनके राम दशरथ के पुत्र और शक्ति-शील तथा सौंदर्य के पुंज हैं। मानव का रूप धारण कर उन्होंने धर्म तथा सन्तों की रक्षा की है तथा दुष्टों एवं राक्षसों का संहार किया है। वे राम को अवतारी पुरुष मानते हैं–

"विप्र, धेनु, सुर, सन्त हित लीन्ह मनुज अवतार।"

आदर्श चरित्र : राम-काव्य में राम मर्यादापुरुषोत्तम तथा आदर्श चरित्र प्रधान हैं। भाई, पुत्र, पति आदि सभी रूपों में राम आदर्श चरित्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस काव्य में राम के साथ-साथ अन्य पात्रों को भी आदर्श के रूप में चित्रित किया गया है। दशरथ आदर्श पिता, कौशल्या आदर्श माता, सीता आदर्श पत्नी, भरत आदर्श भाई तथा हनुमान आदर्श भक्त हैं।

भक्ति की प्रधानता : राम भक्ति-काव्य में भक्ति की ही प्रधानता है। ये कवि ज्ञान और कर्म से भक्ति को श्रेष्ठ मानते हैं। भक्ति द्वारा जीव का लोक-परलोक दोनों सुधरता है। तुलसीदास तो यहाँ तक कह देते हैं–

"तुलसीदास सब भाँति सकल सुख, जो चाहसि मन मेरो।
तो भजु राम काम सब पूरन, करहिं कृपा निधि तेरो।।"

समन्वय की भावना : राम-काव्य-धारा में विविध प्रकार की समन्वयात्मक प्रवृत्ति दिखलाई पड़ती है। तुलसी का काव्य तो समन्वय की विराट् चेष्टा है। इनमें ज्ञान, भक्ति तथा कर्म के साथ-साथ विविध देवी-देवताओं की स्तुति में भी समन्वय की चेष्टा की गई है। काव्य के कला पक्ष अर्थात् भाषा, छन्द में भी समन्वय देखा जा सकता है। उपासना में समन्वय दिखलाते हुए तुलसीदास लिखते हैं :–

"शिव द्रोही मम दास कहावा,
सो नर सपनेहुँ मोहि न भावा।"

उत्कृष्ट काव्य : विषय वस्तु ही नहीं रचना शैली की दृष्टि से भी राम भक्ति काव्य उच्चकोटि के हैं। भक्तिकाल में प्रबन्ध और मुक्तक दोनों प्रकार के काव्य लिखे गए हैं।

जन-जीवन के कवि : राम-काव्य की परम्परा के कवि सही अर्थ में जनकवि हैं। किसी राजा के आश्रय में रहकर उसकी खुशामद में ये काव्य नहीं लिखे गए हैं। यही कारण है कि इनके काव्य, जीवन का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये सभी कवि विनीत और विनम्र हैं। इनकी रचना लोकहितार्थ हुई है।

काव्य-भाषा : राम काव्य-परम्परा की अधिकांश रचनाएँ अवधी भाषा में लिखी गई हैं। ब्रजभाषा में लिखी जाने वाली रचनाएँ कम संख्या में हैं।

निर्गुण तथा सगुण रूपों की स्वीकृति : इस धारा में कवियों ने अपने उपास्य राम के निर्गुण तथा सगुण दोनों रूपों को स्वीकार किया है। राम-काव्य-प्रणेताओं ने स्वीकार किया है–"सगुनहिं अगुनहिं नहिं कहु भेदा"।

सेवक-सेव्य भाव : इस शाखा के कवियों ने राम की भक्ति सेवक-सेव्य भाव से की है। इस भावना से वे मोक्ष में विश्वास करते हैं। तुलसीदास लिखते हैं–

"सेवक सेव्य भाव बिनु, भव न तरिय उरगारि।"

लौकिक पुरुष के वर्णन का अभाव : इन कवियों ने अपने काव्य में किसी लौकिक पुरुष, राजा-महाराजा आदि का वर्णन नहीं किया है। राम के अतिरिक्त किसी को काव्य में चित्रित करना ये काव्य और कवित्व का अपमान समझते थे।

छन्द : इन कवियों ने उस समय की प्रचलित सभी शैलियों–दोहा, सोरठा, चौपाई, छप्पय, कवित्त, सवैया, बरवै आदि को अपनाया है।

हिन्दी साहित्य में रामभक्ति विषयक काव्य देने का सर्वाधिक गौरव तुलसीदास को प्राप्त है। ये ही राम भक्ति काव्य के सम्राट् हैं। तुलसीदास कवि के रूप में क्रान्तिदर्शी थे। धर्म और समाज के साथ इन्होंने राजनीति का मार्ग प्रशस्त किया। अपने समय की प्रचलित सभी काव्य शैलियों को इन्होंने स्वीकार किया।

कृष्ण काव्य

कुछ तथ्य :

- डॉ॰ भण्डारकर तथा लोकमान्य तिलक वैदिक ऋषि आंगिरस कृष्ण तथा गीता के उपदेष्टा महाभारत कालीन कृष्ण को पृथक्-पृथक् मानते हैं। ऋग्वेद के प्रथम, अष्ट्म तथा दशम मंडल में भी कृष्ण का उल्लेख है। डॉ॰ भण्डारकर गोपाल कृष्ण को गीता का उपदेष्टा महाभारतकालीन कृष्ण से भिन्न मानते हैं।
- ग्रियर्सन, कैनेडी, वेबर आदि पाश्चात्य विद्वान् कृष्ण की बाललीलाओं को क्राइस्ट के चरित का अनुकरण मानते हैं। कृष्ण की लीलाओं के भक्त के लिए प्रसाद की प्राप्ति परमध्येय है। इसे उन्होंने लवफीस्ट कहा है।
- श्रीकृष्ण विषयक प्रमुख पुराण भागवत (इसकी रचना दक्षिण भारत में हुई थी।) में राधा को वह महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त नहीं है। जो हरिवंश, ब्रह्मवैवर्त आदि पुराणों। रास पंचाध्यायी में तो रासलीला का मोहक वर्णन होते हुए भी राधा का स्पष्ट नामोल्लेख तक नहीं है।
- रामभक्ति के लिए प्रसिद्ध दक्षिण के आलवार भक्तों में से कई कृष्ण के भी उपासक थे।
- माधुर्य कृष्ण का वर्णन पुराणों से प्रारम्भ होता है। इसके पूर्व महाभारत में षडैश्वर्यशाली कृष्ण (ज्ञान, शक्ति, बल, ऐश्वर्य, वीर्य तथा तेज) का ही वर्णन है।
- सहजिया सम्प्रदाय में कृष्ण और राधा को 'रस' और 'रति' नाम से पुकारते हैं।

संस्कृत/प्राकृत/अपभ्रंश साहित्य में कृष्णकथा

- कृष्णलीलाओं का संस्कृत काव्यों में सबसे पहले उल्लेख अश्वघोष के 'ब्रह्मचरित' काव्य में मिलता है।
- कृष्णकथा की कुछ मुख्य रचनाएं हैं।

गाहा सतसई (हालकवि), वेणीसंहार (नाटक), नाट्यदर्पण, अलंकार कौसतुभ, कंदर्प मंजरी, कृष्ण कथामृत, श्रीकृष्ण लीलामृत तथा गीत गोविन्द (जयदेव)।

- 12वीं से 15वीं सदी के मध्य की प्रमुख रचनाएं हैं।

हरिलीला (बोपदेव), यादवाभ्युदय (वेदान्त देशिक), हरिचरित काव्य, गोपलीला, कंसनिधन महाकाव्य, ब्रजबिहारी, गोपालचरित, मुरारिविजय नाटक हरविलास।

16वीं सदी में कृष्ण चैतन्य (चैतन्य महाप्रभु) के शिष्य षट्गोस्वामियों ने कृष्णभक्ति साहित्य को साहित्यशास्त्र की रस-परिघाटी पर स्थापित किया। इन्होंने संस्कृत में दो ग्रन्थ रचे–उज्जवल नीलमणि (रूपगोस्वामी), हरिभक्तिरसामृत सिन्ध (रूपगोस्वामी), षटसंदर्भ (सनातन गोस्वामी), भगवत्संदर्भ (जीवगोस्वामी)।

कृष्ण काव्य की विशेषताएं

कृष्ण काव्य धारा के प्रमुख कवि सूरदास हैं। इस शाखा में पुष्टिमार्ग और अष्टछाप का विशेष योगदान रहा है। वल्लभाचार्य और उनके अनुयायियों ने कृष्ण की लीलाओं का कीर्तन-गान किया। इस शाखा के कवि कृष्ण के अनन्य उपासक हैं। सूरदास ने सखा के रूप में कृष्ण-चरित्र का वर्णन किया है। इस काव्य की विशेषताओं में निम्नलिखित प्रमुख हैः–

कृष्ण की लीलाओं का वर्णन : इन कवियों का प्रमुख विषय कृष्ण की लीलाओं का गान है। वात्सल्य भाव के अन्तर्गत कृष्ण की बाल-लीलाओं, चेष्टाओं तथा माँ यशोदा के हृदय की झाँकी मिलती है। सख्य भाव के अन्तर्गत कृष्ण और ग्वालों के जीवन की मनोरंजक घटनाएँ मिलती हैं। माधुर्य भाव के अन्तर्गत गोपी लीला प्रमुख है।

विषय वस्तु की मौलिक उद्भावना : कृष्ण काव्य का आधार भागवत पुराण है किन्तु इन कवियों ने पर्याप्त मौलिक उद्भावनाओं से काम लिया है। इन कवियों ने जयदेव तथा विद्यापति का आधार लेते हुए भी यथेष्ट कल्पना शक्ति से काम लिया है। इन्होंने कृष्ण-चरित्र में नवीन रूप-रंग भरकर उसे उभारा तथा निखारा है।

भक्ति-भावना–कृष्ण-काव्य के सभी सम्प्रदायों ने कान्ता भाव को, भक्ति को अधिक महत्त्व दिया है।

रस-चित्रण : कृष्ण काव्य में एक ही रस है और वह रस है भक्ति रस। शास्त्रीय दृष्टि से वात्सल्य, शान्त एवं शृंगार रस कह सकते हैं। इस काव्य में रस का पूर्ण परिपाक हुआ है। रस की दृष्टि से यह साहित्य अत्यन्त भव्य बन पड़ा है। वात्सल्य एवं शृंगार चित्रण में कृष्ण काव्य के कवि अद्वितीय हैं। शृंगार के संयोग एवं वियोग दोनों पक्षों का वर्णन अत्यन्त मनोरम बन पड़ा है।

प्रकृति-चित्रण : प्रकृति-चित्रण भाव की पृष्ठभूमि में हुआ है। यह उद्यीपन भाव के लिए या अलंकारों के अप्रस्तुत विधान के रूप में हुआ है। प्रकृति का स्वतंत्र चित्रण नहीं के बराबर है।

पात्र एवं चरित्र-चित्रण : कृष्ण-काव्य पात्रों के चरित्र-चित्रण की एक विशेषता है– प्रतीकात्मकता।

राधा–माधुर्य भाव की भक्ति की उच्चतम प्रतीक हैं। श्रीकृष्ण परमात्मा हैं और गोपियाँ जीवात्माएँ हैं।

सामाजिक पक्ष : कृष्ण-काव्य लीलावादी काव्य है। लीला, लीला के लिए होती है। उसका लोक मंगल भावना से विशेष सम्बन्ध नहीं होता है किन्तु इस काव्य में उस समय की सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक अवस्था का थोड़ा बहुत यथार्थ वर्णन मिल जाता है। सूर के पदों में परोक्ष रूप से समाज की झलक मिलती है।

काव्य-रूप : कृष्ण-काव्य मुख्य रूप से गेय मुक्तक रूप में लिखा गया है। इन कवियों ने कृष्ण के जीवन के जिस अंश को अपने काव्य के लिए चुना वह मुक्तक के लिए ठीक था। इसमें गीति-काव्य का सुन्दर विकास हुआ है।

शैली : इस काव्य में प्रमुख रूप से गीति शैली का व्यवहार किया गया है, जिसमें गीति शैली के तत्त्व—भावात्मकता, संगीतात्मकता, वैयक्तिकता, संक्षिप्तता, एवं भाषा की कोमलता विद्यमान है।

छन्द : इस साहित्य में अधिकतर गीति पदों का प्रयोग है। इसमें कवित्त, सवैया, छप्पय, कुण्डलियां, गीतिका एवं कुछ अन्य छन्दों का भी प्रयोग मिलता है।

भाषा : कृष्ण-काव्य में लोक-प्रचलित ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।

रीतिकाल

इस काल में राजाओं और सुल्तानों के दरबारों में कविता और कवियों को आश्रय मिला। भक्ति काल की भक्तिधारा धीरे-धीरे लुप्त होने लगी। राधा-कृष्ण के प्रेम के स्थान पर नायक-नायिका के प्रेम को स्थान दिया जाने लगा।

इस काल को रीति काल इसलिए कहा जाता है कि इस समय रीति ग्रंथों की रचना हुई। रीति का अर्थ है—काव्यशास्त्र के विभिन्न अंगों, रस, ध्वनि, अलंकार, काव्य के गुण-दोष आदि का वर्णन। इस काल में जो रीतिग्रंथ लिखे गये, उनमें नायिका-भेद, नख-शिख, षट्ऋतु वर्णन, ध्वनि, अलंकार और काव्य के लक्षणों की विवेचना की गई। इस काल की कविता में पाण्डित्य प्रदर्शन की भावना दिखाई पड़ती है। कवियों ने भावपक्ष की अपेक्षा कलापक्ष को संवारने में अधिक रुचि दिखाई।

रीतिकाल में मुख्यतः शृंगार, नीति और भक्ति सम्बन्धी कवितायें लिखी गईं—प्रधानता शृंगार सम्बन्धी रचनाओं की ही रही। इस काल की तीन मुख्य प्रवृत्तियाँ थीं—(1) शुद्ध शृंगारिक भाव, (2) रीति काव्य अथवा लक्षण ग्रंथों की विवेचना और (3) वीर रस की अभिव्यक्ति।

इस काल के कवियों ने कृष्ण और गोपियों के प्रेम की आड़ में नायक-नायिकाओं, उनके नख-शिख और अंग-प्रत्यंगों का वर्णन किया। इस वर्णन में अलंकारों का चमत्कार प्रचुर मात्रा में है। दरबारी कवियों ने अपने आश्रयदाताओं के बारे में लिखा।

बिहारीलाल, भूषण, मतिराम, देव, पद्माकर, सेनापति और घनानंद आदि इस काल के प्रमुख कवियों में हैं। केशवदास भक्त कवि थे किन्तु उन्हें रीति काल का आचार्य भी माना जाता है। इस काल के अन्य कवि ठाकुर, वृन्द, दीनदयाल गिरि, गिरधरदास, लाल, सूदन, नागरी दास आदि थे।

चिन्तामणि, मतिराम, देव, भिखारीदास, पद्माकर, बिहारी आदि कवियों ने जहां रीति ग्रंथों की रचना की, वहीं शृंगार, नख-शिख और नायिका भेद का भी मार्मिक चित्रण किया। भूषण ने वीर रस की कविताएं लिखीं। दीनदयाल गिरि की अन्योक्तियां उल्लेखनीय हैं। भूषण, सूदन और लाल की रचनायें राष्ट्रीय चेतना की द्योतक हैं। वृन्द और गिरधरदास ने सदाचार और नीति पर लिखा।

इस काल के कविता सम्राट् बिहारी थे। आपके दोहे विहारी सतसई में संग्रहीत हैं। बिहारी ने छोटे-छोटे दोहों में गम्भीर भाव भर कर 'गागर में सागर' की उक्ति चरितार्थ की है। महाकवि देव ने इस काल में सबसे अधिक लिखा। वह कवि और आचार्य दोनों थे। स्वाभिमानी भूषण ने स्वदेश प्रेम की कविताएं लिखीं।

रीतिकालीन साहित्य मुक्तक रचनाओं में है। आचार्य केशन ने 'राम चन्द्रिका' नामक एक प्रबन्ध काव्य लिखा। अन्य कवियों ने प्रायः मुक्तक रचनायें लिखीं। इस काल में काव्य की भाषा ब्रजभाषा थी। दोहा, कवित्त, सवैया जैसे छंदों की प्रधानता रही—बिहारी ने केवल दोहे लिखे। फारसी और अरबी के शब्दों का प्रयोग करने में भी कवियों को कोई हिचकिचाहट नहीं थी। रीतिकालीन कवियों ने शृंगार रस को रसराज का स्थान दिया। इस काल में अलंकार आदि से कविता के बाह्य रूप को सजाया-संवारा गया। इसलिए इस काल की कविताएं कलात्मक सौन्दर्य की दृष्टि से बड़ी उत्कृष्ट हैं।

प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं विशेषताएं

रीतिकाल को शृंगार काल भी कहा जाता है। रीतिकाल का उदय उस समय हुआ जब महलों में तलवारों की झनझनाहट के स्थान पर चूड़ियों की खन-खनाहट सुनाई पड़ रही थी। समाज में सुरा, स्वर्ण और सुन्दरियों का आदर बढ़ता जा रहा था। इस काल के कवियों ने—'आगे के सुकवि रीझिहैं तो कविताई न तो राधा गोविन्द सुमिरन को बहानो है'—कहकर संतोष कर लिया था। इस काल के कवियों में स्वान्तः सुखाय और परहिताय का अभाव है। इस काल की प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियों एवं विशेषताओं को निम्नलिखित बिन्दुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है :—

लौकिक शृंगारिकता : इस काल के कवियों ने नायिका भेद, नखशिख आदि का जो कुछ भी वर्णन किया है सर्वत्र शृंगार की ही प्रधानता है। डॉ. नगेन्द्र ने ठीक ही कहा है—"साँचा चाहे जैसा भी रहा हो इसमें ढाली शृंगारिकता ही है। इसकी अभिव्यक्ति में किसी प्रकार का संकोच नहीं किया गया है। इस काल की कविता से विवेकहीन एवं विलासमयी वासना की दृष्टि होने लगी। शृंगार रस के संयोग एवं वियोग दोनों पक्षों को अच्छी तरह सजाया गया।" इस काल के कवियों ने संयोग में स्पर्श सुख का भी खुलकर वर्णन किया है। देव की रचना का एक उदाहरण है—

'श्वेद बढ़्यो तन कम्प उरोजनि,
आँखिन आँसू कपोलन हाँसी।'

लक्षण ग्रंथों का निर्माण : इस काल में कवि और आचार्य दोनों का काम एक ही व्यक्ति को करना पड़ा है। दोनों में से किसी को भी इस काल के कवि भली-भाँति निभा नहीं सके। उनमें संतुलित विवेचन शक्ति का अभाव था। संस्कृत आचार्यों का अनुकरण वे ठीक तरह से नहीं कर सके। स्वतंत्र और मौलिक रूप से काव्य शास्त्र का विवेचन नहीं हो सका। इस युग में दो प्रकार के कवि हुए। प्रथम श्रेणी के कवियों ने लक्षण लिखकर स्वरचित उदाहरण प्रस्तुत किए। जैसे—भूषण, देव आदि। द्वितीय श्रेणी के कवियों ने केवल उदाहरण दिए। जैसे—बिहारी लाल।

अलंकारिता : इस काल के कवि अलंकार प्रिय थे। उन्हें अपनी कविता-कामिनी को भली-भाँति सजाकर आश्रयदाताओं के समक्ष प्रस्तुत करना पड़ता था। सरस और सीधी सादी कविता उत्तेजना रहित होने के

कारण पसन्द नहीं की जाती थी। राज दरबार में सम्मान प्राप्त करने के लिए कवि को अलंकार शास्त्र का ज्ञान रखना अनिवार्य था।

ब्रजभाषा की प्रधानता : इस काल की प्रमुख साहित्यिक भाषा ब्रजभाषा थी। कोमलता और मधुरता की दृष्टि से भारतीय भाषाओं में इसका बहुत सम्मान है। अपने माधुर्य गुण के कारण यह अनेक मुसलमान कवियों द्वारा भी अपनाई गई।

मुक्तक काव्य शैली की प्रधानता : रीतिकाल प्रबन्ध रचना के लिए उपयुक्त नहीं था। उस समय कवियों में प्रतिक्षण बाजी जीतने की होड़ थी। वासना तृप्ति के लिए मुक्तक काव्य शैली ही उपयुक्त थी। कवि में प्रबन्ध काव्य लिखने के लिए धैर्य नहीं था। कवियों का मन कवित्त, सवैया और दोहा लिखने में विशेष रूप से रम गया।

भक्ति और नीति : रीतिकाल के कवियों का उद्देश्य अपने आश्रयदाता को रिझाना था। भक्ति की ओट में उन्होंने यह काम किया।

प्रकृति का उद्यीपन रूप : इस काल के कवियों ने प्रकृति के उद्यीपन रूप का ही चित्रण किया है। उन्हें प्रकृति के उन्मुक्त प्रांगण में विचरने और उसके स्वतंत्र रूप से चित्रण का अवकाश कहाँ था? संयोग और वियोग के उदाहरणों के लिए प्रकृति को माध्यम बनाया गया। वियोगिनी नायिका चन्द्रमा को कोसती हुई कहती है–

ए रे मतिमन्द चन्द, आवत न तोहि लाज,
होके द्विजराज, काज करत कसाई के।

नारी-चित्रण : नारी सौंदर्य ही वह धुरी है जिसके चारों ओर रीतिकाल की कविता चक्कर लगाती रही। रीतिकाल की नारी अपने आँगन में लाल के द्वारा उड़ाए हुए पतंग की छाया को चूमती फिरती है। ऐसा लगता है जैसे वासना ही उसके जीवन का सब कुछ हो–

उड़ी गुड़ी लखि लाल की अँगना अँगना माह।
बौरी लै दौरी फिरै छुवत छबीली छाँह।।

यहाँ नारी कोई व्यक्ति या समाज के संगठन की इकाई नहीं बल्कि सब प्रकार की विशेषताओं से यथासम्भव मुक्त विलास का एक उपकरण मात्र है। देव ने कहा है–

कौन गने पुखन नगर कामिनी एकै रीति,
देखत हटे विवेक को, चित्त हटै करि प्रीति।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि रीतिकाल, काव्य-शास्त्र की दृष्टि से चाहे इतना महत्त्वपूर्ण न हो, कवित्त की दृष्टि से बड़ा मनोरम है और इसका साहित्यिक मूल्य अक्षुण्ण है।

रीतिकाल में दो तरह की रचना शैलियां रही हैं– एक वे रचनाएं हैं जो लक्षण-लक्ष्य की परम्परा में आती है। इन्हें रीतिपरक रचनाएं कहते हैं। दूसरी वे रचनाएं हैं जो इस परम्परा से पूर्णतः या अधिकांशतः मुक्त हैं। ये रचनाएं रीतिमुक्त रचनाएं कही जाती हैं। काव्यशास्त्र की परिपाटी पर की गयी काव्य रचना को 'लक्ष्य ग्रन्थ' कहते हैं तथा इन लक्ष्यों को लिखने हेतु निर्मित काव्यशास्त्र 'लक्षण ग्रन्थ' कहलाते हैं। शास्त्र को सुगम बनाने के लिए लक्षणों के साथ प्रायः उदाहरण के रूप भी मिलते हैं जबकि 'लक्ष्य ग्रन्थों में केवल लक्षणों के आधार पर रचा गया काव्य न कि लक्षण'। लक्षण ग्रन्थों को रचने वाले आचार्य कहलाते हैं। विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इन्हें रीतिबद्ध कवि कहा है तथा डा॰ नगेन्द्र ने रीतिसिद्ध कवि। हम सीधे-सीधे 'लक्षण ग्रन्थकार' एवं 'लक्ष्यग्रंथकार' कह कर ही उनका परिचय देंगे।

लक्षणग्रन्थकार : केशव, चिन्तामणि, कुलपति मिश्र, देव, मतिराम, भिखारीदास, जसवंतसिंह, तोष, सुरति मिश्र, श्रीपति, जनराज, कुमारमणि, सोमनाथ, याकूब खां, रामसिंह, सेवादास, बेनीप्रवीन, पद्माकर, उदयनाथ, कृष्णकवि, कालिदास, भूषण, गोप, दलपतिराम, रघुनाथ, दूलह, बैरीसाल, सुखदेव मिश्र, माखन, जयकृष्ण, भुजंगदास, दशरथ, रामसहाय आदि।

लक्ष्यग्रन्थकार : सेनापति, बिहारी, रसनिधि, वृंद आदि।

रीतिमुक्त कवि : घनानन्द, आलम, ठाकुर बोधा, द्विजदेव।

रीतिकाल की अन्य काव्य प्रवृत्तियां

संतकाव्य–

प्रमुख सन्त : यारी साहब, दरिया साहब, जगजीवनदास, पलटूसाहब, चरनदास, शिवनारायण, तुलसी साहब, गुरु तेगबहादुर, आनन्दघन (जैन), अक्षर अक्षन्य, प्राणनाथ, धरणीदास, बूला साहब, गरीबदास, दयाबाई एवं सहजोबाई।

सम्प्रदाय-प्रवर्तक : सतनामी सम्प्रदाय (जगजीवनदास), चरनदासी सम्प्रदाय (चरनदास), साहबपन्थ (तुलसी साहब), गरीबदास सम्प्रदाय (गरीबदास), राधास्वामी सत्संग (स्वामी शिवदयाल)।

प्रमुख रचनाएं : ज्ञानदीपक (दरिया साहब), गुरु अन्यास (शिवनारायण), घटरामायण (तुलसी साहब), प्रेम प्रगास (धरणीदास), रत्नावली (धरणीदास), शब्दसागर (बूला साहब), सहज प्रकाश (सहजोबाई), ककहरा, शब्द, रमैनी (महाराज विश्वनाथ सिंह)।

सूफी/प्रेमाख्यान काव्य

प्रमुख कवि : कासिमशाह, नूरमुहम्मद, शेख निसार, सूरदास, दुखहरनदास, दामोदर, हंस, बोधा, केसि तथा अन्य।

राम-काव्यधारा

प्रमुखकवि : सेनापति, लालदास, गुरुगोविन्द सिंह, जानकीरसिकशरण, भगवन्तराम खींची, जनकराजकिशोरीशरण, नवलसिंह कायस्थ, विश्वनाथसिंह, रामप्रियाशरणदासजी, रसिकअली, सरजूराम पण्डित, कृपानिवास, मधुसूदन, जानकीशरणजी, बाल अजीजू, गोकुलनाथ, मनियार सिंह, ललकदास, गणेश, प्रेमसखी, रामचरणदास, जीवाराम, युगनान्यशरण।

कृष्ण-काव्यधारा

प्रमुखकवि : गुमान मिश्र, ब्रजवासीदासी, मंचित कवि, रूपरसिकदेव, नागरीदास, अलबेली अलि, चाचा हितवृन्दावनदास, भगवतरसिक, वृन्दावनदेव, पीताम्बरदास, सुन्दरी कुंवरिबाई, प्रेमसखीजी, सहचरिसरनदास, मंजरीदास, कृष्णदास, रत्नकुंवरि, दामोदर चौधरी 'उरदाम' भोला भण्डारडी, बणी-ठणी जी।

नीतिकाव्य

वृन्द (वन्द सतसई), गिरिधर कविराय (कुण्डलियां : लिखी हैं जिनमें 'गिरधर कविराय' की छाप है), बैताल ('विक्रम' को सम्बोधित करके कुण्डलियां लिखी हैं।)। सम्मन (दोहे लिखे हैं), रामसहायदास (राम सतसई, ककहरा), दीनदयाल गिरि (अन्योक्तिकल्पद्रम)।

❖

रीतिकालीन गद्य साहित्य

ब्रजभाषा गद्य : चौरासी वैष्णवन की वार्ता (गोकुलनाथ), दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता, (गोकुलनाथ), हरतालिका कथा, (मीनराज प्रधान, 17वीं सदी), अष्टांग योग (अक्षरअनन्य 17वीं सदी), भावना संज्ञक टिप्पणी वाले वल्लभ सम्प्रदायी ग्रन्थ जैसे 'निजवार्ताभावना', 'भावभावना', आदि (हरिराय 18वीं सदी), पुष्टि प्रवाह मर्यादा (हरिराय), सेवक जू कोचरिग (प्रियादास), बैताल पच्चीसी (सूरति मिश्र), हितोपदेश ग्रन्थ महाप्रबोधिनी (देवीचन्द), स्वप्न प्रसंग (अनन्य अली), राजनीति (लल्लू लाल 19वीं सदी), ग्रन्थसजीवन (आलम 19वीं सदी)।

काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ जिनमें टिप्पणी ब्रजभाषा गद्य प्रयुक्त है-

शृंगार मंजरी (चिन्तामणि), कविकल्पतरू (चिन्तामणि), रसरहस्य (कुलपति), काव्यनिर्णय (भिखारीदास), अलंकार रत्नाकर (दलपतिराय), रसपीयूषनिधि (सोमनाथ), अलंकार शिरोमणि (बेनी कवि), रसिक गोविन्दानन्दघन (रसिकगोविन्द), पिंगल (सुखदेव मिश्र), वृत्ततरंगिणी (रामसहाय दास), बलभद्रप्रकाश (करनेस), व्यंग्यार्थ कौमुदी (प्रतापसिंह), काव्यविलास (प्रतापसिंह), अलंकार भ्रमभंजन (ग्वाल), पद प्रसंगमाला (नागरीदास), अणभौविलास (रामचरणदास), प्रबोधचन्द्रोदय (जसवन्त सिंह), माधोविलास (लल्लू लाल)।

खड़ी बोली गद्य : 'फर्सनामा' या 'पोथीसलोत्री की' (रचनाकार अज्ञात), सुरासुर निर्णय (मुंशी सदा सुख लाल), मोक्ष मार्ग प्रकाश (टोडरमल जैन), चिद्विलास (दीप चन्द्र जैन), वार्तिक (मुंशी सदा सुख लाल), भाषा योग वशिष्ठ (रामप्रसाद निरंजनी), भाषा पद्पुराण या 'पदमपुराण वचनिका' (दौलतराम जैन), सुदृष्टि तरंगिणी वचनिका (टेकचन्द जैन), गीतानुवाद (बीरबल), सूर्य सिद्धान्त (पं. कामोदानन्द मिर अनूदित)।

फोर्ट विलियम कॉलेज : नासिकेतोपाख्यान (सदलमिश्र – कठोपनिषद् के नचिकेता प्रसंग पर), प्रेम सागर (लल्लूलाल), रानी केतकी की कहानी या उदयभान चरित (इंशा अल्ला खां), सुखसागर (मुंशी सदा सुख लाल नियाज), रामचरित्र (सदल मिश्र), सिंहासन बत्तीसी (लल्लूलाल), बैताल पच्चीसी (लल्लूलाल)।

दक्खिनी गद्य : रिसाले बजूदिया (शाह बुरहानुद्दीन कादिरी), गंजमखफी (मोहम्मद शरीफ)।

राजस्थानी गद्य : मौलिक गद्य रूप हैं – बात, ख्यात, वचनिका, वर्णन, दशवैत, सलोका, पत्र, वंशावली, पदावली, विगत, पीढी। अनूदित गद्य रूप हैं – बालाबोध, टीका, टिप्पण, भाषा।

भोजपुरी : गद्य रूप हैं – पत्र, दस्तावेज, सनद, पंचनामा आदि।

अवधी गद्य : रसविनोद (भानुमिश्र), उड्डील (नित्यनाथ), 'मानस' टीका (रामचरण), सगुनावली (गौतम ऋषि), व्यवहारदास (प्रियादास), कबीरदास टीका (विश्वनाथ), परमधर्मनिर्णय (विश्वनाथ सिंह)।

आधुनिक काल

इस काल में राष्ट्रीय भावनायें पनपने लगी थीं। राजनीति, धर्म, समाज, अर्थशास्त्र आदि क्षेत्रों में नए विचार आये; नई शिक्षा ने लोगों में नई चेतना, राष्ट्रभक्ति और देश प्रेम पैदा किया। इन सबके समग्र प्रभाव से देश में एक नई लहर पैदा हो गई, जिसे राष्ट्रीयता की लहर कहा जा सकता है।

आधुनिक काल की रचनायें उपरोक्त प्रवृत्तियों और आन्दोलनों से प्रेरित हैं। अध्ययन की सुविधा के लिए आधुनिक काल को तीन भागों में बांटा जा सकता है–(1) प्रथम उत्थान, (2) द्वितीय उत्थान, (3) तृतीय उत्थान। मोटे तौर पर भारतेन्दु बाबू के समय को हम प्रथम उत्थान, महावीर प्रसाद द्विवेदी के समय को द्वितीय उत्थान और उसके बाद के समय को तृतीय उत्थान मान सकते हैं।

प्रमुख प्रवृत्तियाँ एवं विशेषताएं

सामान्यतः आधुनिक काल का प्रारम्भ सन् 1843 ई. से माना गया परन्तु किसी भी नवीन युग की प्रवृत्तियों का जन्म अकस्मात् एक दिन में नहीं हो जाता। युग परिवर्तन की एक निश्चित तिथि का उल्लेख करना या उसकी स्थिर स्पष्ट विभाजन रेखा खींच देना बहुत कठिन है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने भी आधुनिक काल का प्रारम्भ सं. 1900 से माना परन्तु हिन्दी में नवीन विचारधाराओं का आगमन या आधुनिक कालीन प्रवृत्तियों का बीजारोपण इसके चालीस पचास वर्ष पूर्व ही हो चुका था। शिक्षा प्रसार और भाषा सम्बन्धी समस्याओं को सुलझाने के लिए सन् 1800 ई. में ही कोलकाता में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना हो चुकी थी। खड़ी बोली के विकास की नींव इस कॉलेज की स्थापना के साथ पड़ी। इस प्रकार आधुनिक काल का पूर्ववर्ती काल तभी से प्रारम्भ हुआ माना जाता है।

यह हिन्दी का एक महत्त्वपूर्ण काल है। इस काल में राष्ट्रीयता, स्वाधीनता और स्वदेश प्रेम की लहर फैली। इसमें साहित्यकारों ने राष्ट्र की अधोगति पर आठ-आठ आँसू बहाये, गद्य और पद्य दोनों का विकास हुआ। प्रिय प्रवास, साकेत, कामायनी, गोदान, चित्रलेखा, चन्द्रगुप्त आदि उच्चकोटि के ग्रंथों की रचना हुई। छायावाद, रहस्यवाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद आदि के माध्यम से कवियों ने माँ सरस्वती का अनुपम शृंगार किया। इसकी प्रमुख प्रवृत्तियों का वर्णन निम्न बिन्दुओं के आधार पर किया जा सकता है–

गद्य का विकास : इस युग की सबसे बड़ी विशेषता गद्य का बहुमुखी विकास है। इस युग के पूर्व विशेषतः मुद्रण यंत्र के अभाव में केवल कविता का ही विकास हो पाया था। पद्य ही साहित्य का पर्यायवाची बना रहा। गद्य के विकास और उन्नति के कारण अनेक आलोचक इस युग को गद्यकाल के नाम से पुकारते हैं। वस्तुतः गद्य अपने विविध रूपों–नाटक, निबन्ध, कहानी, उपन्यास, समालोचना, जीवन चरित्र आदि के साथ इस युग को गौरवान्वित कर रहा है।

खड़ी बोली की प्रधानता : खड़ी बोली की प्रधानता हिन्दी पद्य और गद्य दोनों के लिए स्वीकार की गई। नव-युग की चेतना की अभिव्यक्ति के लिए खड़ी बोली ही उपयुक्त भाषा मानी गई। यही खड़ी बोली बढ़ते-बढ़ते राष्ट्र भाषा के उच्च पद पर आसीन होने योग्य हुई। इसका सम्बन्ध देश की प्रादेशिक भाषाओं से निरन्तर बढ़ता जा रहा है, जो राष्ट्रीय एकता के लिए सर्वथा वांछनीय है।

राष्ट्रीय भावना की वृद्धि : आधुनिक हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय भावना की वृद्धि इसकी तीसरी महान् विशेषता है। इस देश में राजनीतिक चेतना धीरे-धीरे बढ़ी। इसके रूप विभिन्न उत्थानों में परिवर्तित होते रहे। प्रथम उत्थान (भारतेन्दु काल) में साहित्यकारों का ध्यान राजभक्ति और देशभक्ति

दोनों की ओर था। भारत के अतीत गौरव का गान किया गया और उसके वर्तमान पर क्षोभ और असंतोष की भावनाएँ व्यक्त की गईं।

द्वितीय उत्थान (द्विवेदी युग) में राजनीतिक चेतना का विस्तार हुआ। कांग्रेस के कार्यक्रम बढ़े। कितने और मजदूर सामने आए। राष्ट्र-प्रेम का सन्देश देशभर में भली-भाँति गूँज उठा। चतुर्थ उत्थान में राष्ट्र प्रेम की भावना और अधिक प्रबल हो उठी। किसान, श्रमिक और हरिजन, सभी राष्ट्र प्रेम के महत्त्व को समझकर देश के लिए अपना सब कुछ बलिदान करने को प्रस्तुत हो गए और देश स्वतंत्र हुआ।

साधारण जन-जीवन का साहित्य : वीरगाथा काल में राजाओं और सामन्तों से सम्बन्धित काव्य रचना हुई। भक्तिकाल में राम और कृष्ण का गुणगान हुआ। रीतिकाल में आश्रयदाता राजाओं को रिझाने के उद्देश्य से काव्य-सुन्दरी को सँवारा गया। आधुनिक काल में हमारे साहित्यकारों का ध्यान सर्वसाधारण की ओर गया। जो गिरे हुए थे उन्हें उठाने की आवश्यकता महसूस की गई। कृषक, मजदूर, विधवा आदि सहानुभूति के पात्र बने।

कवि के व्यक्तित्व की प्रधानता : आधुनिक युग के पहले हमारे कवियों ने एक प्रकार से दूसरों को प्रसन्न करने के लिए काव्य-रचना की। उन्होंने वीर गाथा काल और रीतिकाल में यही किया। रीतिकाल की कविता खानापूरी मात्र थी। आधुनिक काल की कविता में कवि के व्यक्तित्व की प्रधानता है। इसी कारण इसका झुकाव मुक्तक की ओर अधिक और प्रबन्ध काव्य की ओर कम है।

प्रकृति का सुन्दर वर्णन : प्रकृति चित्रण की दृष्टि से हिन्दी का प्राचीन काव्य संस्कृत की ह्रासोन्मुख प्रवृत्ति और परम्परा का पोषण करता रहा। प्रकृति को नए प्राण देने की क्षमता आधुनिक युग के कवियों में ही पाई जाती है। इन्होंने प्रकृति का वर्णन उद्यीपन रूप में न करके आत्मालम्बन रूप में ही अधिक किया है। श्रीधर पाठक द्वारा रचित 'कश्मीर-सुषमा' में देश के शोभामय गौरव की मनोहर झलक है। पंत ने प्रकृति की कल्पना प्रेमी के रूप में की है। इनके अतिरिक्त महादेवी, प्रसाद, निराला आदि हिन्दी काव्य के प्रकृति-उद्यान में ऐसे कवि माली हैं जिन्होंने कविता-क्यारियों को सुन्दर काव्य पुष्पों से भली-भाँति सजा दिया है।

शृंगार की भावना का विकास : रीतिकालीन शृंगार की भावना का आधुनिक काल में विरोध किया गया। उसे अश्लील माना गया और त्याज्य समझा गया। छायावाद युग में उच्चकोटि के प्रेम काव्य की रचना हुई। शृंगार का शुद्ध, स्वच्छ और निखरा हुआ रूप सामने आया है। जैसे–

शशिमुख पर घूँघट डाले, आँचल में दीप छिपाए,
जीवन की गोधूली में कौतूहल से तुम आए।

वादों की प्रधानता : आधुनिक काल में वादों की प्रधानता रही। इस काल में वादों की बाढ़-सी आ गई। इनसे युग-साहित्य में वृद्धि हुई। इस काल के प्रमुख वाद हैं–छायावाद, रहस्यवाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद आदि। इन विविध वादों के कारण इस युग का बौद्धिक विकास हुआ और इन्हें अपनाने वाले साहित्यकारों की वृद्धि के कारण साहित्य-निर्माण का क्षेत्र विस्तृत हुआ।

साहित्य पर अंग्रेजी का प्रभाव : आधुनिक युग पर अंग्रेजी साहित्य का प्रभाव भी कम महत्त्व नहीं रखता है। इस युग के पूर्व हमारे साहित्य पर पश्चिम का प्रभाव नहीं था। हिन्दी काव्य, नाटक, उपन्यास, कहानी, निबन्ध, आलोचना आदि विधाओं पर अंग्रेजी का प्रभाव प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से पड़ा है। इससे भाषा और भाव दोनों दृष्टियों से हमारे पद्य और गद्य के विविध रूपों का विकास और परिष्कार हुआ है।

मनोविज्ञान का समावेश : आधुनिक काल के साहित्य में मनोविज्ञान का समावेश महत्त्वपूर्ण विशेषता है। मानव मन का अध्ययन मनोविज्ञान कहा जाता है। नाटक, कहानी, उपन्यास आदि के पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करना अच्छी आलोचना का प्रधान कर्त्तव्य है। मनोविज्ञान के आधार पर प्रस्तुत की गई कहानियाँ विशेष आकर्षण रखती हैं।

मार्क्सवाद का प्रभाव : आर्थिक विषमता का विरोध आधुनिक युग के साहित्य की एक बड़ी विशेषता है। वर्तमान युग मानव-मानव में आर्थिक दृष्टि से बहुत अधिक अन्तर नहीं देखना चाहता। यह प्रभाव मार्क्सवाद का है। दिनकर, रामवृक्ष बेनीपुरी, डॉ. देवराज, राम विलास शर्मा, शलभ श्रीराम सिंह आदि का साहित्य मार्क्सवाद से स्पष्टतः प्रभावित है।

भारतेन्दु युग

इस काल में कवियों की वाणी में देशभक्ति का स्वर था। अतः लोक-हित, मातृ-भाषा और समाज-सुधार जैसे विषयों पर कवितायें लिखी गईं। इस काल के आरम्भ में कविता की भाषा ब्रजभाषा ही थी : परन्तु बाद में धीरे-धीरे खड़ी बोली में कवितायें लिखी जाने लगीं। उस समय के प्रमुख कवियों में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, श्रीधर पाठक, जगन्नाथ दास रत्नाकर, प्रताप नारायण मिश्र आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। भारतेन्दु बाबू ने भारत के अतीत के गौरव और वर्तमान भारत की दुर्दशा का बड़ा मार्मिक चित्रण किया। इस काल में कविता का हृदय बिल्कुल बदला हुआ था। प्रथम उत्थान काल के साथ ही हिन्दी कविता ने एक नई करवट ली।

रीतिकाल के समापन के समय ब्रजभाषा अपने सशक्त रूप में थी। खड़ी बोली आधुनिक युग की अनिवार्यता के रूप में उभरी। ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली का लंबे समय तक संघर्ष चला जो छायावादी युग में जाकर निर्मूल हुआ। भारतेन्दु युग में यह विचित्र अन्तर्विरोध था कि हर कवि खड़ी बोली में एक ओर तो आधुनिक बोध वाली रचनायें कर रहा था, दूसरी ओर ब्रजभाषा में रीतिपरक, शृंगारी तथा भक्तिपरक काव्य रचनायें भी।

भारतेन्दु बाबू ने ब्रजभाषा में प्रभूतमात्रा में काव्यरचना की। प्रमुख हैं- प्रेममालिका, प्रेम सरोवर, गीतगोविन्दानन्द, वर्षाविनोद, विनय प्रेमपचासा, प्रेममाधुरी, प्रेमफुलवारी, वेणु-गीत आदि।

भारतेन्दु उर्दू में 'रसा' उपनाम से कविता करते थे। उन्होंने पहेलियां, मुकरियां, व्यंग्यगीत (पैरोडी, स्यापा, गाली), समस्यापूर्तियाँ तथा खड़ी बोली में देश की स्थिति पर कवितायें रचीं। प्रमुख हैं-

- अमानत के नाटक 'इन्दर सभा' की पैरोडी - 'बन्दर सभा'
- उर्दू की स्यापा (है है उर्दू हाय-हाय / कहाँ सिधारी हाय-हाय)
- समस्यापूर्ति (पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना)
- खडी बोली की प्रसिद्ध कवितायें - विजयिनी विजय वैजयन्ती, भरतभिक्षा, विजयवल्लरी, रिपनाष्टक, प्रबोधिनी, बसन्त होली, प्रात समीरन (यह बंगला के पयार छंद में है।) आदि हैं।

द्विवेदी युग

द्वितीय उत्थान काल के अग्रणी साहित्यकार महावीर प्रसाद द्विवेदी थे। उनकी प्रेरणा से हिन्दी की खड़ी बोली में कवितायें धड़ाधड़ लिखी जाने लगीं। इससे खड़ी बोली का अधिकाधिक परिष्कार और संस्कार हुआ। इस काल में खड़ी बोली के प्रमुख कवियों के नाम अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', मैथिलीशरण गुप्त और राम नरेश त्रिपाठी थे। इनके अलावा पं. रामचन्द्र शुक्ल, ठाकुर गोपालशरण सिंह, नाथूराम शर्मा शंकर और गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' के नाम भी उल्लेखनीय हैं। इस काल में ब्रजभाषा के प्रमुख कवि वियोगी हरि और श्री सत्यनारायण कविरत्न थे।

भारतेन्दु युग की ही भांति इस युग में भी अधिकांश रचनायें राष्ट्र-प्रेम, देश-भक्ति, समाज-सुधार, राष्ट्रीय अतीत का गौरव, देश की वर्तमान करुणापूर्ण अवस्था, ग्राम्य जीवन की महत्ता आदि विषयों पर लिखी गईं। इस समय तक खड़ी बोली कविता के लिए पूर्ण समर्थ हो गई थी।

द्विवेदी युग के बाद से अब तक का समय तृतीय उत्थान काल माना जाता है। हिन्दी कविता के लिए यह उत्कर्ष का काल है। इस काल में नए-नए छंदों, अलंकारों का प्रयोग शुरू किया गया। अतुकान्त, छंदमुक्त कविता और अकविता भी इसी काल में लिखी गईं। कविता के वस्तुविधान में भी परिवर्तन आया। प्रकृति-चित्रण, राष्ट्रीयता, आर्थिक वैषम्य, सामजिक कुरीतियों और करुणा-वेदना को कविता के माध्यम से व्यक्त किया गया। इसी प्रकार काव्यगत पद-लालित्य, अभिव्यंजना शैली, प्रतीक आदि का उत्कर्ष इस काल में हुआ।

इस काल के प्रमुख कवियों में जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', रामधारी सिंह 'दिनकर', हरिवंशराय बच्चन, श्यामनारायण पाण्डेय, सोहनलाल द्विवेदी, सियाराम शरण गुप्त, सुभद्राकुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी, अज्ञेय, गिरिजा कुमार माथुर, भवानीप्रसाद मिश्र, धर्मवीर भारती आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

तृतीय उत्थान काल के विकास-क्रम में छायावाद, रहस्यवाद, प्रगतिवाद और प्रयोगवाद का प्रादुर्भाव स्मरणीय है।

छायावाद

छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है। छायावादी कविता में व्यक्तिवाद, अतृप्त प्रेम, निराशा और प्रकृति के मानवीकरण का चित्रण मिलता है। नए छन्द-विधान, नए प्रतीकों तथा लाक्षणिक शब्दावली का प्रयोग भी छायावाद की ही देन है। छायावादी कवियों में जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानन्दन पंत, महादेवी वर्मा और डा. रामकुमार वर्मा के नाम प्रमुख हैं।

रहस्यवादी कवि हृदय की भावुकता की सहायता से प्रकृति के विभिन्न अंगों में ब्रह्म का दर्शन करता है। रहस्यवादी कविता में लाक्षणिक भाषा, प्रतीकों और रूप-विधानों के माध्यम से अनुभूति की अभिव्यक्ति की जाती है। महादेवी वर्मा प्रमुख रहस्यवादी कवयित्री हैं और प्रसादजी की कविता में छायावाद और रहस्यवाद दोनों की छटा देखने को मिलती है। इस तरह छायावादी युग में कवियों ने अपनी अन्तर्मुखी अभिव्यक्ति द्वारा अत्यन्त गहराई की बात सोचने लगे तथा दुनिया की बात न कहकर अपने हृदय की बात कहने लगे।

प्रगतिवाद

प्रगतिवाद का अर्थ है—पुरानी अवांछनीय, हानिकर परम्पराओं का त्याग कर उन्हें बदले हुए समय के अनुरूप बदले हुए रूप में ग्रहण करना। वास्तव में प्रगतिवाद, साम्यवाद का साहित्यिक रूप है। प्रगतिवादी काव्य की मूल चेतना मार्क्स के विचारों से अनुप्राणित है और द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के नाम से जानी जा सकती है। प्रगतिवादी कविता में पीड़ित, शोषित और दलित समाज के प्रति सहानुभूति की तथा पूंजीवाद की कटु आलोचना की अभिव्यक्ति मिलती है। दिनकर और नरेन्द्र शर्मा इस कोटि के अग्रणी कवियों में गिने जाते हैं। इनके अतिरिक्त नागार्जुन, डा. रामविलास शर्मा, गजानन माधव मुक्तिबोध के नाम गिने जा सकते हैं।

प्रयोगवाद

प्रयोगवादी कवियों में अज्ञेय, गिरिजाकुमार माथुर, प्रभाकर माचवे, धर्मवीर भारती, डा. जगदीश गुप्त और नरेश मेहता के नाम उल्लेखनीय हैं। प्रयोगवादी रचनाओं का आरंभ 1943 से माना जाता है, जब 'तार सप्तक' प्रकाशित हुआ। उसके बाद 1950 के लगभग 'प्रतीक' के प्रकाशन से प्रयोगवाद को ठोस भूमि मिली। प्रयोगवादी कविताओं में व्यक्तिवाद की तीव्रतम अनुभूतियाँ अपने स्वाभाविक रूप में प्रकाश में आती हैं। प्रयोगवादी रचनायें बुद्धिवादी और विचित्रतापूर्ण होती हैं। इनमें नवीन विषय, नवीन भाषा और नवीन सृजन शैली और यहां तक कि सब कुछ नवीन होता है। प्रयोगवादी कविता के कवियों ने प्राचीन मूल्यों और परम्पराओं से हटकर नया प्रयोग करने का साहस किया है।

नई कविता

आधुनिक काल के कुछ कवियों ने किसी वाद या विचारधारा से बंधे बिना स्वतंत्र रूप में रचनायें लिखीं। ऐसे कवियों में सुभद्राकुमारी चौहान, सियारामशरण गुप्त, सोहनलाल द्विवेदी, श्यामनारायण पाण्डेय और बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

नई कविता के क्षेत्र में उल्लेखनीय नाम हैं : नरेश मेहता, लक्ष्मीकान्त वर्मा, विजयदेव नारायण साही, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, कुंवरनारायण, रघुवीर सहाय, श्रीकान्त वर्मा, केदार सिंह आदि।

लोक जीवन से सम्बन्धित विषयों पर मधुर गीत लिखने वालों में शम्भूनाथ सिंह, गोपालदास 'नीरज', वीरेन्द्र मिश्र, सोम ठाकुर के नाम स्मरणीय हैं।

हिन्दी काव्य नये विषय, नवीन परिधान, नूतन प्रतीक, शैली और अनुभूतियों से सम्पन्न होकर निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर हो गई।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

आदि काल

1. निम्नलिखित में से कौन हिन्दी का कवि था?
A. कालिदास B. बाणभट्ट
C. भारवि D. हेमचन्द्र

2. बौद्ध और जैन धर्म साहित्य किस भाषा में बहुलता से मिलता है?
A. हिन्दी में B. अवधी में
C. मागधी में D. पाली में

3. शौरसेनी भाषा किस क्षेत्र में प्रचलित थी?
A. सौराष्ट्र में B. महाराष्ट्र में
C. मथुरा में D. मगध में

4. प्राकृत भाषा की अन्तिम अवस्था जो लोकप्रिय हुई, क्या कहलाई?
A. अपभ्रंश B. मागधी
C. खड़ी बोली D. कन्नौजी

5. आदि काल/वीरगाथा काल का समय था—
A. 11वीं से 14वीं शताब्दी B. 7वीं से 14वीं शताब्दी
C. 7वीं से 11वीं शताब्दी D. 8वीं से 14वीं शताब्दी

6. निम्नलिखित में से कौन सिद्ध नहीं था?
A. सरहपा B. लूईपा
C. कण्हपा D. कल्हण

7. सिद्धों की साधना किस नाम से विख्यात हुई?
A. वज्रयान B. हीनयान
C. सहजयान D. नाथ पंथ

8. 'गोरखवाणी' का रचयिता कौन था?
A. मत्स्येन्द्रनाथ B. गोरखनाथ
C. मलूकदास D. दादू

9. निम्नलिखित प्रवृतियों में से कौन-सी प्रवृति आदिकाल के साहित्य की नहीं थी?
A. धर्म B. वीरता
C. शृंगार D. वात्सल्य

10. वीरगाथा काल की रचनाओं में वीर रस के साथ ही—
A. शान्त रस भी है B. शृंगार रस भी है
C. भक्ति रस भी है D. हास्य रस भी है

11. अमीर खुसरो—
A. फारसी और संस्कृत दोनों के विद्वान थे
B. विनोदी और सहृदय थे
C. की मुकरियां बहुत सरल हैं
D. उपरोक्त सभी

12. खालिकबारी किसकी रचना है?
A. निजामुद्दीन औलिया B. गुरु नानक
C. अमीर खुसरो D. कुतबन

13. अमीर खुसरो की मसनवियां किस भाषा में हैं?
A. उर्दू B. फारसी
C. हिन्दी D. अरबी

14. 'अभिनव जयदेव' की उपाधि किसे मिली थी?
A. चैतन्य महाप्रभु को B. विद्यापति को
C. भट्ट केदार को D. उपरोक्त में से कोई नहीं

15. 'खुमानरासो' का रचयिता कौन था?
A. दलपति विजय B. नरपति नाल्ह
C. चन्दबरदाई D. जगनिक

16. 'पृथ्वीराज रासो' का रचयिता कौन था?
A. नरपति नाल्ह B. चन्दबरदाई
C. शारंगधर D. परमाल

17. हिन्दी का प्रथम महाकाव्य किसे माना जाता है?
A. पृथ्वीराज रासो B. खुमान रासो
C. बीसलदेव रासो D. सन्देश रसिक

18. आल्हा खण्ड में किसकी वीरता का वर्णन है?
A. आल्हा और ऊदल की B. राजा हमीर की
C. पृथ्वीराज की D. बीसलदेव की

19. कुछ लोगों का विचार है कि पृथ्वीराज रासो ग्रंथ को चन्दबरदाई के पुत्र ने पूरा किया, जिसका नाम था—
A. जल्हण B. कल्हण
C. विल्हण D. उपरोक्त में से कोई नहीं

20. वीर काव्य के बारे में कौन-सा कथन गलत है?
A. इसमें युद्धों का वर्णन है
B. इसमें वीर रस के साथ शृंगार रस भी है
C. इनकी भाषा ओजपूर्ण है
D. ये पूर्णतः प्रामाणिक माने जाते हैं

21. अमीर खुसरो की रचना कौन-सी है?
A. आखिरी कलाम B. खालिकबारी
C. मधुमालती D. मृगावती

22. विद्यापति की विख्यात रचना कौन-सी है?
A. पद्मावत B. पदावली
C. मधुमालती D. मृगावती

23. शारंगधर द्वारा रचित ग्रंथ है—
A. आल्ह खण्ड B. वीसलदेव रासो
C. पृथ्वीराज रासो D. हम्मीर रासो

24. निम्नलिखित में से किस ग्रंथ में वीर रस की अपेक्षा शृंगार रस अधिक है?
A. पृथ्वीराज रासो B. हम्मीर रासो
C. बीसलदेव रासो D. आल्ह खण्ड

25. वीरगाथा काल की एक रचना 'संदेश रसिक' है। इसका रचयिता कौन था?
A. शारंगधर B. अमीर खुसरो
C. अब्दुल रहमान D. हेमचन्द्र

26. एक प्रतिष्ठित ग्रंथ 'उक्तिव्यक्ति प्रकरण' किसका लिखा हुआ है?
A. विद्याधर का B. मधुकर का
C. श्रीधर का D. दामोदर भट्ट का

27. किस ग्रंथ में राधा-कृष्ण के प्रेम का अनूठा वर्णन है?
A. पद्मावत B. पदावली
C. मृगावती D. मधुमालती

28. संस्कृत साहित्य में जो स्थान जयदेव का है, हिन्दी साहित्य में वही स्थान–
A. दलपति विजय का है B. विद्यापति का है
C. जगनिक का है D. चैतन्य का है

29. अमीर खुसरो की भाषा पर किसका प्रभाव दिखता है?
A. ब्रजभाषा का B. अवधी का
C. मागधी का D. भोजपुरी का

30. पृथ्वीराज रासो में वीर रस के साथ है–
A. भक्ति रस B. करुण रस
C. शान्त रस D. शृंगार रस

31. दलपति विजय की रचना है–
A. कीर्तिपताका B. पदावली
C. खुमान रासो D. बीसलदेव रासो

32. विद्यापति की पदावली में–
A. वीर रस प्रधान है
B. संयोग शृंगार नहीं, वियोग शृंगार है
C. भक्ति और शृंगार दोनों हैं
D. आश्रयदाता की प्रशंसा है

33. खुमान रासो में–
A. राजा शिवसिंह की वीरता का वर्णन है
B. चित्तौड़ के खुमान के युद्धों का वर्णन है
C. पृथ्वीराज के यश का वर्णन है
D. आल्हा-ऊदल की वीरता का वर्णन है

34. आदि काल में निम्नलिखित में से कौन-सी रचना तिरहुत के शासक की प्रशंसा में लिखी गई थी?
A. परमाल रासो B. कीर्तिलता
C. मृगावती D. मधुमालती

35. कौन-सा ग्रंथ-लेखक जोड़ा सही है?
A. पद्मावत – विद्यापति
B. पृथ्वीराज रासो – चन्दबरदाई
C. आल्ह खण्ड – नरपति लाल्ह
D. बीसलदेव रासो – जगनिक

36. किस कवि को हिन्दी का आदि गीतकार माना जाता है?
A. जायसी को B. जगनिक को
C. जयदेव को D. विद्यापति को

37. अपभ्रंश काव्य अधिकतर किस छंद में लिखा गया है?
A. रोला में B. छप्पय में
C. कवित्त में D. दूहा (दोहा) में

38. विद्यापति रचित मैथिली का विख्यात ग्रंथ है–
A. कीर्तिलता B. कीर्तिपताका
C. पदावली D. पद्मावत

39. आदिकाल को कुछ साहित्यकारों ने–
A. महाकाव्य काल कहा है B. आचार्य काल कहा है
C. चारण काल कहा है D. साधना काल कहा है

40. अमीर खुसरो की पहेलियां और मुकरियां किस भाषा में हैं?
A. अरबी में B. फारसी में
C. अवधी में D. खड़ी बोली में

भक्ति काल

41. निम्नलिखित में से कौन निर्गुण भक्ति धारा का कवि नहीं था?
A. जायसी B. कबीर
C. मीरा D. नानक

42. निम्नलिखित में से कौन सगुण भक्ति धारा का कवि नहीं था?
A. रसखान B. सूरदास
C. नन्द दास D. कुतबन

43. कौन-सा कवि ज्ञानमार्गी शाखा का नहीं था?
A. कबीर दास B. मलूक दास
C. दादू दयाल D. जायसी

44. 'प्रेम की पीर' की अभिव्यक्ति किन कवियों ने की?
A. प्रेममार्गी कवियों ने B. ज्ञानमार्गी कवियों ने
C. सगुण धारा के कवियों ने D. उपरोक्त में से कोई नहीं

45. 'बीजक' में किसकी कविताएँ संग्रहीत हैं?
A. जायसी की B. कबीर की
C. रहीम की D. नानक की

46. प्रेममार्गी कवियों पर किसका गहरा प्रभाव था?
A. सूफी सम्प्रदाय का B. अवतारवाद का
C. विशिष्टाद्वैत का D. नाथ सम्प्रदाय का

47. 'पद्मावत' की रचना किसने की थी?
A. मंझन ने B. कुतबन ने
C. जायसी ने D. रज्जब ने

48. प्रेममार्गी कवियों की रचनायें–
A. खड़ी बोली में हैं B. ब्रज भाषा में हैं
C. ठेठ अवधी में हैं D. मागधी में हैं

49. निम्नलिखित में से किसकी भक्ति सख्य भाव की थी?
A. मीरा की B. तुलसीदास की
C. रसखान की D. सूरदास की

50. सूरदास की रचनाओं में हमें किसका हृदयग्राही वर्णन मिलता है?
A. भक्ति का B. श्रृंगार का
C. वात्सल्य का D. उपरोक्त तीनों का

51. ज्ञानमार्गी कवियों की रचनाओं में हमें किसका वर्णन मिलता है?
A. ज्ञान का B. साधना का
C. एकेश्वरवाद का D. उपरोक्त तीनों का

52. निर्गुण भक्ति अवतारवाद की धारणा से–
A. ओतप्रोत थी B. पोषित थी
C. परे थी D. निसृत थी

53. निम्नलिखित में से कौन कृष्ण भक्ति शाखा का कवि नहीं था?
A. सूर B. मीरा
C. रसखान D. केशव

54. 'लहरतारा' स्थान का सम्बन्ध किस कवि से है?
A. जायसी से B. रसखान से
C. कबीर से D. मलूकदास से

55. कबीरदास किसके शिष्य थे?
A. रामानंद के B. वल्लभाचार्य के
C. रामानुजाचार्य के D. गोरखनाथ के

56. 'मगहर' और 'लोई' से किसका सम्बन्ध है?
A. रैदास का B. दादू दयाल का
C. मलूकदास का D. कबीर का

57. कबीरदास के सम्बन्ध में कौन-सा कथन गलत है?
A. वे गुरु-महिमा को मानते थे
B. वे अवतारवाद को मानते थे
C. वे धार्मिक पाखंडों के विरोधी थे
D. वे जीव और ब्रह्म की एकता में विश्वास करते थे

58. जायसी का पद्मावत काव्य–
A. मसनवी शैली में लिखा गया है
B. भक्ति काव्य है
C. खड़ी बोली में है
D. उपरोक्त सभी

59. सूरदास ने 'भ्रमरगीत' में–
A. निर्गुण ब्रह्म का उपहास किया है
B. निर्गुण ब्रह्म में आस्था प्रकट की है
C. कृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन किया है
D. यशोदा के वात्सल्य का अनूठा वर्णन है

60. 'रासपंचाध्यायी' किसकी विख्यात रचना है?
A. नंददास B. रसखान
C. कुम्भनदास D. स्वामी हरिदास

61. निम्नलिखित में से कौन 'अष्टछाप' के आठ कवियों में सम्मिलित नहीं था?
A. सूरदास B. नंददास
C. कुम्भनदास D. कबीर दास

62. बांदा जिले का राजापुर गांव किस कवि का जन्म-स्थान था?
A. बिहारी लाल B. मैथिलीशरण गुप्त
C. तुलसीदास D. भूषण

63. 'कवितावली' का रचयिता कौन है?
A. नंददास B. तुलसीदास
C. नरहरिदास D. केशवदास

64. तुलसीदास रचित 'विनय पत्रिका' में–
A. विनय और भक्ति के पद हैं
B. वैराग्य के पद हैं
C. बाल लीला के पद हैं
D. उपरोक्त सभी

65. राम भक्ति काव्य में–
A. ज्ञान को श्रेष्ठता प्रदान की गई है
B. भक्ति को श्रेष्ठ माना गया है
C. वैराग्य को श्रेष्ठ माना गया है
D. उपरोक्त दोनों को बराबर का स्थान दिया गया है

66. केशवदास कवि होने के साथ-साथ–
A. गायक भी थे B. आचार्य भी थे
C. संत भी थे D. पाखण्ड-विरोधी भी थे

67. किस कवि को 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा जाता है?
A. घनानंद B. सूरदास
C. केशवदास D. तुलसीदास

68. केशवदास की रचनाओं में सबसे महत्वपूर्ण रचना कौन-सी है?
A. कविप्रिया B. रसिकप्रिया
C. रामचन्द्रिका D. विज्ञानगीता

69. रहीमदास के दोहों में–
A. नीति है B. भक्ति है
C. उपदेश है D. उपरोक्त सभी हैं

70. 'कवित-रत्नाकर' का रचयिता कौन था?
A. नरोत्तमदास B. केशवदास
C. सेनापति D. नंददास

71. 'भक्तमाल' का रचयिता कौन था?
A. अग्रदास B. नाभादास
C. नंददास D. नरोत्तमदास

72. ''अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम'', यह उक्ति किसकी है?
A. कबीरदास B. मलूकदास
C. नंददास D. रहीमदास

73. दादू दयाल–
A. पर कबीर का प्रभाव था
B. सरलता व सादगी में विश्वास करते थे
C. ने गुरु को बहुत महत्व दिया
D. उपरोक्त दोनों

74. सूफी सम्प्रदाय के प्रमुख कवि थे–
A. जायसी B. रहीम
C. रसखान D. केशवदास

75. ''खीरा सिर से काटिये, मलियत नमक लगाय'', यह उक्ति किसकी है?
A. कबीर B. रहीम
C. रसखान D. दादू दयाल

76. 'अखरावट' और 'आखिरी कलम' किसकी रचनायें हैं?
A. रसखान B. खुसरो
C. जायसी D. कुतबन

77. 'मधुमालती' किसकी रचना है?
A. जायसी की B. कुतबन की
C. मंझन की D. रसखान की

78. नागमती का विरह वर्णन हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ विरह-वर्णन है? यह किस ग्रंथ में है?
A. अखरावट में B. पद्मावत में
C. मधुमालती में D. मृगावती में

79. सूफी कवियों के प्रेमाख्यानों में–
A. किसी धर्म-सम्प्रदाय का खंडन-मंडन नहीं है
B. शृंगार रस की प्रधानता है
C. आत्मा को प्रियतम और परमात्मा को प्रिया माना गया है
D. उपरोक्त सभी

80. मीरा के पदों में–
A. राजस्थानी भाषा का प्रयोग हुआ है
B. अवधी का प्रयोग हुआ है
C. खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है
D. उपरोक्त सभी

81. 'प्रेमवाटिका' किसकी रचना है?
A. मीराबाई B. रसखान
C. जायसी D. विद्यापति

82. महाप्रभु वल्लभाचार्य ने पुष्टिमार्ग की स्थापना की। पुष्टिमार्ग में ईश्वर प्राप्ति का सबसे मुख्य साधन है–
A. ज्ञान B. वैराग्य
C. भक्ति D. गुरु

83. अष्टछाप के कवि–
A. सूफी थे B. निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे
C. कृष्णभक्त थे D. रामभक्त थे

84. अष्टछाप के कवियों ने–
A. केवल ब्रजभाषा में लिखा
B. कृष्णभक्ति के केवल माधुर्य पक्ष को ग्रहण किया
C. किसी महाकाव्य की रचना नहीं की, केवल स्फुट रचनायें लिखीं
D. उपरोक्त सभी

85. केशवदास की रचनाओं में–
A. कला पक्ष की प्रधानता है B. काव्य सरसता है
C. भाव पक्ष की प्रधानता है D. प्रकृति का अनूठा चित्रण है

86. ''इन मुसलमान हरिजनन पै, कोटिक हिन्दू वारिये'', यह उक्ति किस कवि के बारे में है?
A. जायसी के बारे में B. रहीम के बारे में
C. रसखान के बारे में D. खुसरो के बारे में

87. जायसी की रचना 'पद्मावत'–
A. प्रेमाख्यान है B. रीति ग्रंथ है
C. भक्ति काव्य है D. वीर काव्य है

88. कौन-सा कथन सही नहीं है?
A. सूफी काव्य प्रायः अवधी में लिखा गया है
B. सूफी सम्प्रदाय खंडन-मंडन को महत्व देता है
C. सूफी सम्प्रदाय में गुरु की बड़ी महिमा है
D. सूफी संतों ने भारतीय लोकाचार को अपनाया

89. जायसी के ग्रंथ पद्मावत में 'हीरामन तोता' की क्या भूमिका है?
A. नायक की B. खलनायक की
C. गुरु की D. साधक की

90. श्री वल्लभाचार्य की शिष्य परम्परा में–
A. निराकार ब्रह्म की आराधना होती है
B. राम की उपासना होती है
C. कृष्ण की उपासना होती है
D. गुरु की महिमा का गान होता है

91. निम्नलिखित में से किसने 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' का उपदेश दिया था?
A. वल्लभाचार्य ने B. शंकराचार्य ने
C. विट्ठलनाथ ने D. रामानुजाचार्य ने

92. 'अलवार' संतों ने किस भाषा में लिखा?
A. तेलुगु B. उड़िया
C. गुजराती D. तमिल

93. गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना किस उद्देश्य से की थी?
A. लोकरंजन के लिए
B. मोक्ष प्राप्ति के लिए
C. राम कथा का स्मरण करने-कराने के लिए
D. स्वान्तः सुखाय

94. निम्नलिखित में से किसने श्री राधावल्लभ सम्प्रदाय नामक नया पंथ चलाया?
A. हितहरिवंश B. वल्लभाचार्य
C. छीतस्वामी D. कृष्णदास

95. किस रस की अभिव्यक्ति में सूरदास संसार के सर्वश्रेष्ठ कवियों में गिने जाते हैं?
A. शृंगार B. शान्त
C. वात्सल्य D. उपरोक्त सभी

96. सूरदास का प्रमुख ग्रंथ 'सूर सागर' है। जनश्रुति के आधार पर इसमें कुल कितने पद थे?
A. एक लाख B. सवा लाख
C. दस हजार D. साठ हजार

97. सूरदास की एक रचना 'साहित्य लहरी' है। इसमें सूरदास ने–
A. कृष्ण की बाल-लीलाओं का चित्रण किया है
B. राधा का नख-शिख वर्णन किया है
C. कृष्ण की रास-लीलाओं का वर्णन किया है
D. उद्धव-गोपी संवाद लिखा है

98. रसखान ने किस भाषा में रचना की?
A. खड़ी बोली में B. अवधी में
C. ब्रजभाषा में D. भोजपुरी में

99. पुष्टिमार्ग के प्रवर्तक कौन थे?
A. रामानंद B. वल्लभाचार्य
C. रामानुजाचार्य D. शंकराचार्य

100. अष्टछाप के कवियों में सबसे बड़ा स्थान किसे प्राप्त है?
A. नंददास को B. छीतस्वामी को
C. सूरदास को D. विट्ठलनाथ को

101. ''जाति-पाति पूछे नहीं कोई, हरी को भजै सो हरि का होई'', उक्त पंक्तियां किस कवि की हैं?
A. नानक की B. कबीर की
C. रहीम की D. मलूक की

102. रतनसेन और पद्मावती की प्रेम-गाथा का वर्णन किस ग्रंथ में है?
A. रतन सेन में B. पद्मावत में
C. ज्ञान बोध में D. मधुमालती में

103. मृगावती किस कवि की रचना है?
A. मंझन की B. जायसी की
C. कुतबन की D. शेखनबी की

104. कृष्णभक्ति का प्रचार कब हुआ था?
A. 15वीं शताब्दी में B. 10वीं शताब्दी में
C. 19वीं शताब्दी में D. 11वीं शताब्दी में

105. श्री वल्लभाचार्य की उपासना में किस पर जोर दिया गया?
A. प्रभु कीर्तन पर
B. राम धुन पर
C. बाल कृष्ण की उपासना पर
D. ब्रह्म की उपासना पर

106. लगभग सारा कृष्ण काव्य–
A. खड़ी बोली में है B. ब्रजभाषा में है
C. अवधी में है D. खिचड़ी भाषा में है

107. चर्यापद किसकी रचना है?
A. विद्यापति की B. खुसरो की
C. जगनिक की D. सरहपा कण्हपा की

108. निर्गुण भक्ति धारा के कवियों ने निम्नलिखित में से किस पर जोर नहीं दिया?
A. निराकार ब्रह्म की उपासना B. आत्मशुद्धि
C. वैयक्तिक साधना D. अवतारवाद

109. निर्गुण भक्ति की प्रेमाश्रयी शाखा के विकास में किसका योगदान प्रमुख रहा?
A. सूफी कवियों का B. मीरा का
C. कबीर का D. नानक का

110. निर्गुण भक्ति की प्रेमाश्रयी शाखा के कवियों की रचनाओं की मुख्य विशेषता है–
A. विरह-वेदना की तीव्रता B. रोचक कथानक
C. प्रेम की पीर D. उपरोक्त सभी

111. निम्नलिखित में से कौन निर्गुण भक्ति धारा का नहीं है?
A. रैदास B. नानक
C. कबीर D. विद्यापति

112. सूफी कवियों ने कैसी प्रेम गाथाओं को अपने काव्य के लिए चुना?
A. अरबी B. फारसी
C. भारतीय D. तीनों

113. रामचरितमानस–
A. मुक्तक रचनाओं का संग्रह है
B. राम के जीवन के कुछ अंशों का वर्णन करता है
C. दोहा-चौपाई में लिखा गया है
D. भक्ति गीतों का संग्रह है

114. कबीरदास–
A. अनपढ़ थे
B. व्यवसाय के जुलाहे थे
C. पर नाथपंथ के हठयोग का प्रभाव था
D. उपरोक्त तीनों

115. रामानंदजी किसके गुरु थे?
A. मीर के B. नंददास के
C. कबीर के D. सूरदास के

116. मगहर नामक स्थान पर किस कवि की मृत्यु हुई थी?
A. केशव की B. चैतन्य की
C. विद्यापति की D. कबीर की

117. संत कबीर–
A. गृहस्थ थे
B. सूफी मत से प्रभावित थे
C. अवतारवाद में विश्वास नहीं करते थे
D. उपरोक्त सभी

118. कुल मिलाकर कबीरदास की भाषा कैसी थी?
A. अपभ्रंश B. खड़ी बोली
C. सधुक्कडी D. अवधी

119. 'भक्तमाल' ग्रंथ का रचयिता कौन है?
A. नंददास B. रामानंद
C. नाभादास D. विट्ठलनाथ

120. किस कवि का जन्म उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले के जायस गांव में हुआ था?
A. नंददास B. जायसी
C. केशवदास D. उपरोक्त में से कोई नहीं

121. किस कवि की निधन तिथि के सम्बन्ध में यह दोहा प्रसिद्ध है
''संवत सोरह सौ असी, असी गंग के तीर''
A. सूरदास B. मीरा
C. कबीर D. तुलसीदास

122. किसका बचपन का नाम 'रामबोला' था?
A. विद्यापति का B. केशवदास का
C. तुलसीदास का D. सूरदास का

123. तुलसी के काव्य में–
A. साधुमत है
B. लोकमत है
C. उपरोक्त दोनों हैं
D. उपरोक्त दोनों में से कोई भी नहीं है

124. कबीर की कविताओं में निम्नलिखित में से एक नहीं है?
A. नीति B. रहस्यवाद
C. सर्वात्मवाद D. छायावाद

125. काल-क्रम की दृष्टि से कौन सबसे पहले हुआ था?
A. कबीर B. मीरा
C. तुलसीदास D. सूरदास

रीति काल

126. रीतिकाल का अभ्युदय–
A. भक्ति काल से पहले हुआ
B. भक्ति काल के बाद हुआ
C. वीरगाथा काल के साथ-साथ हुआ
D. निर्गुण भक्ति और सगुण भक्ति काल के बीच हुआ

127. रीतिकालीन कविता का आरम्भ केशवदास की–
A. 'रामचन्द्रिका' से माना जाता है
B. 'रसिकप्रिया' से माना जाता है
C. 'विज्ञान गीता' से माना जाता है
D. उपरोक्त तीनों से माना जाता है

128. निम्नलिखित में से कौन कवि और आचार्य दोनों रूप में प्रतिष्ठित है?
A. सुमित्रानंदन पन्त B. नाभादास
C. नंददास D. केशवदास

129. कला पक्ष की प्रधानता किस काल की रचनाओं की प्रमुख विशेषता है?
A. वीरगाथा काल B. भक्ति काल
C. रीति काल D. उपरोक्त तीनों

130. रीतिकालीन कवियों ने मुख्यतः किस छंद का प्रयोग किया?
A. चौपाई B. दोहा
C. कवित्त D. कवित्त-सवैया

131. केशवदास किस राजा के आश्रय में थे?
A. बूंदी के राजा भावसिंह B. छत्रसाल
C. शिवाजी D. ओरछा के राजा इन्द्रजीत सिंह

132. नरोत्तम दास की विख्यात कृति कौन-सी है?
A. सुदामाचरित B. कवित्त रत्नाकर
C. नखसिख D. प्रिय-प्रवास

133. रहीम के दोहों में–
A. नीति की बातें हैं B. भक्ति की अभिव्यंजना है
C. उपदेशों की भरमार है D. उपरोक्त तीनों हैं

134. किस कवि की दानशीलता की तुलना 'कर्ण' की दानशीलता के साथ की जाती है?
A. देव B. बिहारी
C. भूषण D. रहीम

135. निम्नलिखित में से कौन-सा ग्रंथ 'रहीमदास' का है?
A. शृंगार सोरठ B. ध्यान मंजरी
C. महारामायण D. हनुमन्नाटक

136. 'कवित्त रत्नाकर' का लेखक कौन है?
A. बलभद्र मिश्र B. नरोत्तमदास
C. सेनापति D. केशवदास

137. तुलसी कृत 'रामचरितमानस' कितने काण्डों (अध्यायों) में है?
A. ग्यारह B. नौ
C. सात D. तेरह

138. तुलसी कृत 'रामचरितमानस'–
A. अवधी में है
B. ब्रज और अवधी दोनों में है
C. मागधी में है
D. उपरोक्त में से किसी में भी नहीं

139. चिन्तामणि किस काल के कवि थे?
A. आधुनिक काल B. भक्ति काल
C. रीति काल D. वीरगाथा काल

140. रीति काल की रचनाओं के विशेष लक्षण हैं–
A. रस, अलंकार B. नायिका-भेद, नख-शिख वर्णन
C. षट्ऋतु वर्णन D. उपरोक्त सभी

141. हिन्दी साहित्य का रीतिकालीन युग मोटे तौर से कबसे कब तक रहा?
A. बाबर से अकबर तक
B. अकबर से औरंगजेब तक
C. जहांगीर से बहादुरशाह तक
D. शाहजहां से बहादुरशाह तक

142. रीतिकालीन काव्य में निम्नलिखित में से किसे महत्व नहीं दिया गया?
A. चमत्कारपूर्ण उक्तियों को B. भावों की नजाकत को
C. कल्पना की मौलिकता को D. हृदय पक्ष या भाव पक्ष को

143. रीतिकालीन काल लगभग कितनी शताब्दियों तक चला?
A. चार शताब्दियों तक B. एक शताब्दी तक
C. तीन शताब्दियों तक D. दो शताब्दियों तक

144. निम्नलिखित में से कौन वीर रस का कवि नहीं था?
A. भूषण B. लाल
C. सूदन D. पद्माकर

145. रीतिकालीन कवियों ने मुख्यतः शृंगार रस की कवितायें लिखीं। उन्होंने शृंगार रस की रचनाओं के लिए किस छंद को प्रधानतः अपनाया?
A. कवित्त B. सवैया
C. हरिगीतिका D. छप्पय

146. रीतिकालीन कवियों ने नारी के केवल एक ही रूप का अंकन किया। वह था–
A. माता रूप B. शक्ति रूप
C. नायिका रूप D. जगदम्बा रूप

147. लगभग सभी रीतिकालीन कवियों ने लक्षण ग्रंथों (रीतिग्रंथों) की रचना की। निम्नलिखित रीतिकालीन कवियों में से किसने लक्षण ग्रंथ की रचना नहीं की?
A. बिहारी लाल B. मतिराम
C. भूषण D. पद्माकर

148. रीतिकालीन साहित्य में–
A. प्रबन्ध काव्यों की अपेक्षा मुक्तक काव्यों की अधिक रचना हुई
B. नवीन विचारों का अभाव रहा
C. नारी के विभिन्न रूपों (चरित्र) का अंकन प्रायः नहीं हुआ
D. उपरोक्त सभी

149. रीतिकाल में स्वच्छन्द कविता लिखने वाले एक कवि थे–
A. घनानंद B. नंददास
C. भिखारीदास D. देव

150. रीतिकाल के कवियों में नीति सम्बन्धी रचनायें किसने लिखीं?
A. वृन्द B. आलम
C. भिखारीदास D. जोधराज

151. कवि गिरधर की–
A. सूक्तियां प्रसिद्ध हैं B. सतसई प्रसिद्ध हैं
C. अन्योक्तियां प्रसिद्ध हैं D. कुण्डलियां प्रसिद्ध हैं

152. बेनी कवि किस प्रकार की रचनाओं के लिए विख्यात हैं?
A. नीति B. वैराग्य
C. भक्ति D. व्यंग्य

153. ध्रुवदास–
A. रीति काल के आचार्य थे
B. रीति काल के वीर रस के कवि थे
C. रीति काल के कृष्ण भक्त कवि थे
D. रीति काल के राम भक्त कवि थे

154. मधुसूदनदास द्वारा रचित ग्रंथ है–
A. रामाश्वमेध B. राम रसायन
C. सीतायन D. गोविन्द रामायण

155. रीतिकालीन आचार्य-कवि चिन्तामणि की सर्वाधिक विख्यात रचना है–
A. कवि कल्पतरु B. पिंगल
C. काव्यदर्पण D. ललित ललाम

156. निम्नलिखित ग्रंथों में से किस एक के रचनाकार मतिराम नहीं है?
A. रस राज B. वृत्तकौमुदी
C. साहित्यसार D. कविकल्पतरु

157. रीतिकालीन कवियों में केवल एक ग्रंथ लिखकर सर्वाधिक सम्मान पाने वाला कवि कौन-सा है?
A. मतिराम B. बिहारी
C. देव D. पद्माकर

158. निम्नलिखित में से किस कवि की रचनाओं के बारे में 'गागर में सागर भरने' की बात कही जाती है?
A. देव B. मतिराम
C. कबीर D. बिहारी

159. शृंगार का सर्वश्रेष्ठ कवि किसे माना जाता है?
A. देव B. मतिराम
C. बिहारी D. पद्माकर

160. 'भावविलास' किस कवि की रचना है?
A. रत्नाकर B. पद्माकर
C. देव D. मतिराम

161. 'काव्य निर्णय' का रचयिता कौन है?
A. बिहारी B. भिखारीदास
C. घनानंद D. मतिराम

162. हिन्दी में उपालम्भ का सर्वश्रेष्ठ कवि किसे कहा जाता है?
A. पद्माकर B. बिहारी
C. घनानंद D. लाल कवि

163. रीतिकालीन कौन-सा कवि 'सुजान' नामक वेश्या पर अनुरक्त था और इसी प्रसंग में उसने 'सुजानसागर' नामक ग्रंथ की रचना की?
A. आलम B. रसलीन
C. ग्वाल D. घनानंद

164. 'गंगा लहरी' के रचयिता कौन थे?
A. देव B. मतिराम
C. आलम D. पद्माकर

165. 'पद्माभरण' का रचयिता कौन था?
A. पद्माकर B. जायसी
C. मतिराम D. देव

166. आचार्य केशव का ग्रंथ 'रामचन्द्रिका'–
A. खण्ड काव्य है B. प्रबन्ध काव्य है
C. मुक्तक रचना है D. उपरोक्त में से कोई नहीं

167. कवि भूषण ने शिवाजी की वीरता व यश गान किया है : लाल कवि ने किसका यश गान किया है?
A. राणा प्रताप का B. छत्रसाल का
C. हिम्मत बहादुर D. गोरा-बादल का

168. निम्नलिखित रचनाओं में से एक रचना भूषण की नहीं है?
A. छत्रसाल दशक B. शिवाबावनी
C. शिवराजभूषण D. अष्टयाम

169. 'बिहारी सतसई' में कितने दोहे हैं?
A. 700 B. 701
C. 725 D. 719

170. 'रसकेलिवल्ली' किसकी रचना है?
A. गंग B. घनानंद
C. रसखान D. देव

171. ब्रजभाषा का कौन-सा कवि ऋतु वर्णन के लिए विख्यात है?
A. सेनापति B. पद्माकर
C. देव D. मतिराम

172. कहा जाता है कि सम्राट् अकबर ने एक कवि की रचना से प्रभावित होकर गोवध बंद करवा दिया था। वह कवि था–
A. नरहरि बन्दीजन B. गंग
C. सेनापति D. आलम

173. रीतिकालीन कवियों की रचनाओं का मुख्य प्रयोजन था–
A. साहित्य की समृद्धि B. स्वान्तः सुखाय
C. आश्रयदाताओं का यशगान D. ऋतु वर्णन

174. हिन्दी साहित्य में रीतिकालीन काव्य परम्परा किसने प्रारम्भ की?
A. देव B. मतिराम
C. सेनापति D. केशव

175. केशवदास ने एक आध्यात्मिक ग्रंथ लिखा, जिसका नाम था–
A. रामचन्द्रिका B. कविप्रिया
C. रसिकप्रिया D. विज्ञान गीता

176. कहा जाता है कि निम्नलिखित पंक्तियों ने एक राजा के जीवन में परिवर्तन ला दिया था–

नहि पराग नहि मधुर मधु, नहि विकास इहि काल।
अली कली ही सों विध्यों, आगे कौन हवाल।।

इन पंक्तियों के रचयिता थे–
A. सेनापति B. पद्माकर
C. रहीम D. बिहारी

177. बिहारी ने अपने काव्य में किस छंद को अपनाया?
A. कवित्त B. छप्पय
C. सवैया D. दोहा

178. 'रसराज' ग्रंथ का रचयिता कौन था?
A. मतिराम B. पद्माकर
C. देव D. चिन्तामणि

179. यह किसकी उक्ति है?

'तबही लौं जीवो भलो, दीवो होय न धीम'

A. कबीर B. रहीम
C. तुलसी D. बिहारी

180. रहीम के सम्बन्ध में कौन-सा कथन गलत है?
A. वह विद्या व्यसनी थे
B. वह योद्धा और राजनीतिज्ञ भी थे
C. वह कलामर्मज्ञ थे
D. वह अनपढ़ थे

181. ज्योतिष ग्रंथ ''खेट कौतुकम'' का रचयिता कौन था?
A. नंददास B. पद्माकर
C. रहीम D. सेनापति

182. महाकवि भूषण–
A. का नाम ही भूषण था B. की जाति भूषण थी
C. की उपाधि भूषण थी D. उपरोक्त में से कोई नहीं

183. भूषण–
A. की भाषा प्रधानतः ब्रज थी
B. ने फारसी और बुन्देलखंडी के शब्दों का भी काफी प्रयोग किया
C. ने शब्दों को तोड़ा-मरोड़ा भी
D. उपरोक्त सभी

184. 'जगद्विनोद' एक श्रेष्ठ रीति ग्रंथ है। इसका रचयिता कौन था?
A. देव B. मतिराम
C. सेनापति D. पद्माकर

185. पद्माकर का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ किसे माना जाता है?
A. प्रबोध पचासा B. गंगालहरी
C. पद्माभरण D. राम रसायन

186. 'कूलन में केलि में कछारन में कुंजन में,
क्यारिन में कलित कलीन किलकंत है।

उपरोक्त अनुप्रासपूर्ण सुन्दर रचना किस कवि की है?
A. पद्माकर B. सेनापति
C. मतिराम D. देव

187. जायसी के पद्मावत में रतनसेन और राजकुमारी पद्मावती के प्रेम का वर्णन है। पद्मावती कहां की राजकुमारी थी?
A. चित्तौड़ B. सिंहलद्वीप
C. नागदेश D. अवन्तिका

188. 'सीतायन' का रचयिता कौन था?
A. मधुसूदनदास B. रसिक बिहारी
C. चिन्तामणि D. रामप्रिया शरण

189. नागरी दास
A. कृष्ण भक्त कवि थे B. राम भक्त कवि थे
C. रीति ग्रंथ कवि थे D. निर्गुण भक्त कवि थे

190. 'पाहन पूजे हरि मिलै, तो मैं पूजूं पहार' यह उक्ति किसकी है?
A. रसखान B. रहीम
C. कबीर D. मलूकदास

191. हिन्दी के किस कवि को वात्सल्य रस का सम्राट् माना जाता है?
A. मीरा B. सूरदास
C. नंददास D. नरोत्तमदास

192. किस कवि का सारा काव्य सरस और गेय है?
A. तुलसीदास B. सूरदास
C. रसखान D. कबीरदास

193. ''तन चितउर मन राजा कीन्हा,
हिय सिंहल बुधि पदमिनि चीन्हा।''
उपरोक्त पंक्तियां किस ग्रंथ की हैं?
A. बीजक B. पद्मावत
C. इश्कनामा D. उपरोक्त में से कोई नहीं

194. ''अमिय हलाहल मद भरे
श्वेत श्याम रतनार
उठत, गिरत, उठ गिरि परत
जेहिं चितवत इक बार''
ये पंक्तियां किस कवि की हैं?
A. इलह कवि B. लाल कवि
C. रसखान D. रसलीन

195. निम्नलिखित में से किस कवि ने उलटवासियां लिखीं हैं?
A. वृन्द B. गिरधर राय
C. रहीम D. कबीर

196. केशवदास की काव्य भाषा थी–
A. भोजपुरी B. अवधी
C. ब्रज D. बुन्देलखण्डी

197. बिहारी सतसई के दोहों में किस रस की प्रधानता है?
A. शान्त रस B. भक्ति रस
C. वीर रस D. शृंगार रस

198. निम्न पंक्तियां किस कवि का परिचय देती हैं?
''जन्म ग्वालियर जानिए, खंड बुन्देले बाल
तरुणाई आई लसत, बसि मथुरा ससुराल''
A. केशव B. पद्माकर
C. सेनापति D. बिहारी

199. किस कवि की यह पंक्ति है?
'मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोय'
A. सूर B. मीरा
C. घनानंद D. बिहारी

200. भूषण के काव्य की भाषा थी–
A. अवधी B. राजस्थानी
C. भोजपुरी D. ब्रज

आधुनिक काल

201. हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल सामान्यतया कब से आरम्भ माना जाता है?
A. 1700 ई. से B. 1750 ई. से
C. 1850 ई. से D. 1900 ई. से

202. हिन्दी के आधुनिक काल के काव्य की एक विशेषता यह है कि–
A. यह जन-जीवन के साथ चला
B. इसमें करुण रस को प्रधानता मिली
C. इसमें जीवन की विभिन्न समस्याओं और उनके समाधान को स्थान मिला
D. उपरोक्त सभी

203. आधुनिक काल की काव्य रचनाओं में–
A. राष्ट्रगौरव जगा
B. राष्ट्रीयता उजागर हुई
C. समाज सुधार की भावनायें मुखरित हुईं
D. उपरोक्त सभी

204. आधुनिक काल के काव्य में–
A. कवितायें खड़ी बोली में लिखी जाने लगीं
B. कवितायें ब्रजभाषा में ही लिखी जाने लगीं
C. कवितायें अवधी में ही लिखी जाती रहीं
D. कवितायें केवल ब्रज व अवधी में लिखी गईं

205. आधुनिक काल के काव्य में–
A. छायावाद आया B. रहस्यवाद अवतरित हुआ
C. प्रगतिवाद का प्रचलन हुआ D. उपरोक्त सभी

206. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने काव्य धारा को किस ओर मोड़ा?
A. शृंगार प्रियता की ओर B. रीति ग्रंथों की ओर
C. निर्गुण भक्ति की ओर D. स्वदेश प्रेम की ओर

207. हिन्दी कविता के वर्तमान युग का प्रवर्तक किसे माना जाता है?
A. बालकृष्ण भट्ट B. जयशंकर प्रसाद
C. महादेवी वर्मा D. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

208. हिन्दी कविता में राष्ट्रीयता की तान सबसे पहले किसने छेड़ी?
A. मैथिलीशरण गुप्त B. माखनलाल चतुर्वेदी
C. रामधारी सिंह 'दिनकर' D. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

209. भारतेन्दु बाबू के सम्बन्ध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?
A. वह रसिक कवि थे
B. वह कविता के लिए किसी वाद से बंधे नहीं थे
C. उन्होंने भक्ति, प्रकृति-चित्रण, हास्य-विनोद पर भी कविताएं लिखीं
D. वह राम भक्त थे

210. निम्नलिखित में से कौन-सी रचना भारतेन्दु की नहीं है?
A. प्रेम पचीसी B. प्रेम माधुरी
C. प्रेम फुलवारी D. प्रेम प्रलाप

211. भारतेन्दु की रचनाओं का संग्रह किस नाम से है?
A. भारतेन्दु दर्पण B. भारतेन्दु प्रसून
C. भारतेन्दु ग्रंथावली D. भारतेन्दु वाणी

212. भारतेन्दु युग को किस नाम से जाना जाता है?
A. समाज-सुधार युग B. छायावादी युग
C. राष्ट्रीय चेतना युग D. महाकाव्य युग

213. ''अंगरेज राज सुख साज सजे सब भारी।
पै धन विदेश चलि जात यहै अतिख्वारी''।।
उपरोक्त पंक्तियां किस कवि की हैं?
A. मैथिलीशरण गुप्त B. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
C. श्रीधर पाठक D. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

214. 'अनुराग रत्न' का रचयिता कौन है?
A. श्रीधर पाठक B. नाथूराम शर्मा शंकर
C. प्रतापनारायण मिश्र D. बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन'

215. भारतेन्दुजी ने गंगा वर्णन में–
A. हास्य-विनोद लिखा है B. प्रकृति-चित्रण किया है
C. व्यंग्य लिखा है D. रसिकता का परिचय दिया है

216. भारतेन्दुजी ने जो मुकरियां लिखीं, उनमें–
A. धार्मिक पाखण्ड पर व्यंग्य है
B. दिखावटी मित्रता पर व्यंग्य है
C. शासन, शिक्षा की समस्याओं पर मार्मिक चोट है
D. सामाजिक व्यवस्था पर करारी चोट है

217. 'सरस्वती' नामक पत्रिका, जिसके सम्पादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी थे, कहां से प्रकाशित होती थीं?
A. काशी से B. मथुरा से
C. कानपुर से D. प्रयाग से

218. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने–
A. खड़ी बोली का परिष्कार किया
B. छायावादी कविताएं लिखीं
C. 'प्रिय प्रवास' की रचना की
D. बालकोपयोगी साहित्य लिखा

219. श्रीधर पाठक की 'देहरादून' कविता किस दृष्टि से उल्लेखनीय है?
A. समाज सुधार B. प्रकृति-चित्रण
C. ग्राम्य जीवन D. नारी-उत्थान

220. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की सर्वोत्तम रचना कौन-सी है?
A. वैदेही वनवास B. रसकलश
C. प्रिय प्रवास D. उपरोक्त में कोई नहीं

221. प्रिय प्रवास का वर्ण्य-विषय क्या है?
A. कृष्ण का मथुरा-प्रवास B. सीता का करुणापूर्ण चित्र
C. राम-वनवास D. बुद्ध का गृहत्याग

222. 'चोखे-चौपदे' किसकी रचना है?
A. रामनरेश त्रिपाठी की B. जगन्नाथ दास रत्नाकर की
C. लाला भगवानदीन की D. उपरोक्त में से किसी की नहीं

223. प्रिय प्रवास–
A. महाकाव्य है
B. खड़ी बोली में है
C. प्रकृति वर्णन की दृष्टि से प्रशंसनीय है
D. उपरोक्त सभी

224. किस ग्रंथ में जगन्नाथदास रत्नाकर को यश मिला?
A. हरिश्चन्द्र B. उद्धवशतक
C. उपरोक्त दोनों D. उपरोक्त में से कोई नहीं

225. 'गंगावतरण' किसकी कृति है?
A. सत्यनारायण 'कविरत्न' B. रामचरित उपाध्याय
C. जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' D. लाला भगवान 'दीन'

226. निम्नलिखित में से कौन-सा कवि 'त्रिशूल' नाम से कविता लिखता था?
A. कामता प्रसाद गुरु B. राय देवी प्रसाद 'पूर्ण'
C. गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही' D. सत्यनारायण 'कविरत्न'

227. 'जयद्रथ वध' का रचयिता कौन था?
A. रूपनारायण पाण्डेय B. माखनलाल चतुर्वेदी
C. महावीर प्रसाद द्विवेदी D. मैथिलीशरण गुप्त

228. चिरगांव, झांसी किस कवि का जन्म स्थान है?
A. रामनरेश त्रिपाठी B. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
C. मैथिलीशरण गुप्त D. रामकुमार वर्मा

229. मैथिलीशरण गुप्त की दो अमर रचनाएं हैं–
A. साकेत और यशोधरा B. साकेत और नहुष
C. यशोधरा और अनघ D. यशोधरा और सिद्धराज

230. मैथिलीशरण गुप्त का 'जयद्रथ वध'
A. खण्ड काव्य है
B. ब्रजभाषा में है
C. राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत है
D. महाकाव्य है

231. 'भारत-भारती' का रचयिता कौन था?
A. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
B. महावीरप्रसाद द्विवेदी
C. रामधारी सिंह 'दिनकर'
D. मैथिलीशरण गुप्त

232. मैथिलीशरण गुप्त के किस ग्रंथ में लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला का सुन्दर चरित्र-चित्रण है?
A. भारत भारती B. पंचवटी
C. साकेत D. द्वापर

233. मैथिलीशरण गुप्त का कृष्णकाव्य कौन-सा है?
A. नहुष B. द्वापर
C. सिद्धराज D. चन्द्रहास

234. गौतम बुद्ध की पत्नी के उज्ज्वल चरित्र के अंकन के लिए मैथिलीशरण गुप्त ने किस ग्रंथ की रचना की?
A. द्वापर B. यशोधरा
C. भारत भारती D. अनघ

235. ''मैं घमण्डों में भरा ऐंठा हुआ
एक दिन जब था मुंडेरे पर खड़ा
आ अचानक दूर से उड़ता हुआ
एक तिनका आँख में मेरी पड़ा''
उपरोक्त पंक्तियां किस कवि की हैं?
A. मैथिलीशरण गुप्त B. अयोध्यासिंह उपाध्याय
C. रामनरेश त्रिपाठी D. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

236. 'पथिक', 'मिलन' और 'स्वप्न' किसकी रचनायें हैं?
A. रामनरेश त्रिपाठी B. माखनलाल चतुर्वेदी
C. सियारामशरण गुप्त D. लोचनप्रसाद पाण्डेय

237. ''हम कौन थे, क्या हो गए हैं और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी।।''
ये पंक्तियां किस कवि की हैं?
A. रामधारी सिंह 'दिनकर' B. माखनलाल चतुर्वेदी
C. श्यामनारायण पाण्डेय D. मैथिलीशरण गुप्त

238. ''मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जायें वीर अनेक।।''
ये पंक्तियां राष्ट्रप्रेम से ओतप्रोत हैं। इनका रचयिता कौन है?
A. सियारामशरण गुप्त B. जयशंकर प्रसाद
C. माखनलाल चतुर्वेदी D. गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही'

239. 'हिमकिरीटिनी' और 'हिमतरंगिणी' किसकी रचनायें हैं?
A. माखनलाल चतुर्वेदी B. रामधारी सिंह 'दिनकर'
C. सुमित्रानंदन पंत D. महादेवी वर्मा

240. कौन-सा कवि 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से कविता लिखता था?
A. मैथिलीशरण गुप्त B. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
C. माखनलाल चतुर्वेदी D. सोहनलाल द्विवेदी

241. ''कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ
जिससे उथल-पुथल हो जाये।''
ये पंक्तियां किस कवि की हैं?
A. माखनलाल चतुर्वेदी B. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
C. सियारामशरण गुप्त D. रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'

242. द्विवेदी युग में किस कवि ने अन्य कवियों को खड़ी बोली में कविता लिखने हेतु प्रोत्साहित किया?
A. अयोध्यासिंह उपाध्याय B. जगन्नाथ दास 'रत्नाकर'
C. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र D. महावीर प्रसाद द्विवेदी

243. जगन्नाथ दास 'रत्नाकर'
A. की काव्य-भाषा ब्रज भाषा है
B. को गंगावतरण से बड़ी ख्याति मिली
C. का भक्ति काव्य 'उद्धव शतक' है
D. उपरोक्त सभी

244. मैथिलीशरण गुप्त की पहली रचना कौन-सी थी?
A. साकेत B. सिद्धराज
C. यशोधरा D. जयद्रथ वध

245. खड़ी बोली का पहला महाकाव्य कौन-सा है?
A. साकेत B. गंगावतरण
C. प्रिय प्रवास D. कामायनी

246. 'प्रिय प्रवास' में किस रस की प्रधानता है?
A. शृंगार रस B. वात्सल्य रस
C. करुण रस D. शान्त रस

247. मैथिलीशरण गुप्त के साहित्यिक गुरु कौन थे?
A. पं. रामचन्द्र शुक्ल B. पं. प्रतापनारायण मिश्र
C. पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी D. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

248. गुप्तजी के ग्रन्थ 'साकेत' की नायिका कौन है?
A. कैकेई B. सीता
C. कौशल्या D. उर्मिला

249. 'नवीन' उपनाम से कविता लिखने वाला कवि था–
A. बालकृष्ण शर्मा B. रूपनारायण पाण्डेय
C. सत्यनारायण D. गया प्रसाद शुक्ल

250. 'आर्द्रा' के रचनाकार थे–
A. रामकुमार वर्मा B. सियारामशरण गुप्त
C. सोहनलाल द्विवेदी D. तारा पाण्डे

251. काशी से प्रकाशित होने वाली साहित्यिक पत्रिका कौन-सी थी?
A. इंदु B. सरस्वती
C. कर्मवीर D. मतवाला

252. अयोध्या सिंह उपाध्याय की काव्य-रचना की एक विशेषता है–
A. सधुक्कड़ी हिन्दी का प्रयोग
B. शुद्ध ब्रजभाषा का प्रयोग
C. संस्कृत की समासयुक्त पदावली का प्रयोग
D. उर्दू बहुक्त पदावली का प्रयोग

253. 'पुष्प की अभिलाषा' राष्ट्रीय विचारधारा की कविता है, जिसके शब्द हैं–
''चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊं''
इस कविता का रचयिता कौन है?
A. मैथिलीशरण गुप्त
B. रामधारी सिंह 'दिनकर'
C. सियारामशरण गुप्त
D. माखनलाल चतुर्वेदी

254. सियारामशरण गुप्त की 'मौर्य विजय'–
A. करुण रस प्रधान रचना है
B. वीर रस प्रधान रचना है
C. पौराणिक घटना पर आधारित है
D. समसामयिक विषय से सम्बन्धित है

255. ''स्वर्ग की तुलना उचित ही है यहां।
किन्तु सुरसरिता कहां, सरयू यहां।
वह मरों को मात्र पार उतारती
यह यहीं से जीवितों को तारती।''
उपरोक्त पंक्तियां किस कवि की हैं?
A. मैथिलीशरण गुप्त B. सुमित्रानंदन पंत
C. रामकुमार वर्मा D. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

256. किस कवि को साधारणतया गांधीवादी कवि कहा जाता है?
A. रामधारी सिंह 'दिनकर'
B. सोहनलाल द्विवेदी
C. मैथिलीशरण गुप्त
D. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

257. निम्नलिखित में से एक सोहनलाल द्विवेदी का काव्य संग्रह है, वह है–
A. भैरवी B. आर्द्रा
C. चेतना D. गुंजन

258. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' के सम्बन्ध में कौन-सा कथन सही नहीं है?
A. उनकी अधिकांश रचनायें जेल में लिखी गईं
B. वह फकीर बादशाह थे
C. 'हम विषपायी जनम के' उनकी प्रसिद्ध रचना है
D. वह छायावाद के प्रतिनिधि कवि थे

259. खड़ी बोली के प्रथम महाकाव्य रचयिता कौन थे?
A. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
B. जयशंकर प्रसाद
C. रामधारी सिंह 'दिनकर'
D. मलिक मुहम्मद जायसी

260. हरिऔधजी का ग्रंथ 'प्रियप्रवास' किस भाषा में है?
A. अवधी B. खड़ी बोली
C. संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली D. ब्रज

261. श्यामनारायण पाण्डेय का सुविख्यात महाकाव्य कौन-सा है?
A. राणा प्रताप B. मेघनाद वध
C. हल्दीघाटी D. कुरुक्षेत्र

262. 'चित्राधार' किस कवि की ब्रजभाषा की प्रथम कृति है?
A. रामधारी सिंह 'दिनकर' B. जयशंकर प्रसाद
C. जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' D. उपरोक्त में से कोई नहीं

263. 'आंसू' किसकी कृति है?
A. सोहनलाल द्विवेदी B. सुमित्रानंदन पंत
C. हरिवंश राय बच्चन D. जयशंकर प्रसाद

264. प्रसादजी की खड़ी बोली की प्रथम काव्य रचना थी–
A. प्रेम पथिक B. चित्राधार
C. कामायनी D. इनमें से कोई नहीं

265. 'निराला' जी का पूरा नाम क्या था?
A. रमाकान्त त्रिपाठी B. उपाकान्त त्रिपाठी
C. सूर्यकान्त त्रिपाठी D. चन्द्रकान्त त्रिपाठी

266. प्रसादजी का महाकाव्य 'कामायनी'
A. वीर रस का श्रेष्ठ काव्य है
B. भक्ति भाव का अनूठा ग्रंथ है
C. आनन्दवाद की श्रेष्ठ रचना है
D. उपरोक्त सभी

267. प्रसादजी का सारा काव्य किससे प्रभावित दिखता है?
A. राष्ट्र प्रेम से B. भारतीय संस्कृति से
C. बौद्ध धर्म से D. उपरोक्त तीनों से

268. प्रसादजी की भाषा–
A. संस्कृतगर्भित है B. चित्रमय है
C. माधुर्य गुण सम्पन्न है D. उपरोक्त सभी

269. प्रसादजी का गीति काव्य है–
A. कानन-कुसुम B. लहर
C. झरना D. उपरोक्त सभी

270. ''किरण! तुम क्यों बिखरी हो आज,
रंगी हो तुम किसके अनुराग।''
प्रकृति-चित्र की उपरोक्त पंक्तियां किस कवि की हैं?
A. सुमित्रानंदन पंत B. रामकुमार वर्मा
C. महादेवी वर्मा D. जयशंकर प्रसाद

271. आधुनिक हिन्दी साहित्य में रहस्यवाद का जन्मदाता किसे माना जाता है?
A. भगवतीचरण वर्मा B. महादेवी वर्मा
C. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' D. जयशंकर प्रसाद

272. 'बीती विभावरी, जाग री
अम्बर पनघट में डुबा रही
तारा-घट ऊषा नागरी'
उपरोक्त रूपक की एकरूपता वाली पंक्तियां लिखने वाला/वाली कवि/कवयित्री है–
A. महादेवी वर्मा B. सुमित्रानंदन पंत
C. जयशंकर प्रसाद D. मैथिलीशरण गुप्त

273. निम्न पंक्तियां किस कवि की हैं–
''ले चल मुझे भुलावा देकर, मेरे नाविक धीरे-धीरे''
A. सुमित्रानंदन पंत B. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
C. महादेवी वर्मा D. जयशंकर प्रसाद

274. प्रसादजी की कामायनी में पात्र-प्रतीकों के निम्नलिखित जोड़ों में से कौन-सा गलत है?
A. मनु – मन का प्रतीक
B. इड़ा – बुद्धि का प्रतीक

C. श्रद्धा – हृदय का प्रतीक
D. वृषभ – आनंद का प्रतीक

275. 'आँसू' में किस रस की प्रधानता है?
A. शृंगार रस की B. शान्त रस की
C. करुण रस की D. अद्भुत रस की

276. प्रसादजी की रचनाओं में–
A. सांस्कृतिक प्रौढ़त्व है B. विवेक है
C. अनुभूति की गहराई है D. उपरोक्त सभी हैं

277. प्रसादजी का 'आँसू' काव्य–
A. अनुभूति और कल्पना प्रधान है
B. में चमत्कार और उक्ति वैचित्र्य है
C. में उपदेशात्मकता है
D. में विश्वबन्धुत्व की भावना है

278. किस क्षेत्र की रचनाओं के लिए प्रसादजी को अग्रणी कवि माना जाता है?
A. प्रयोगवादी B. प्रगतिवादी
C. छायावादी D. उपरोक्त में से कोई नहीं

279. किस ग्रंथ को प्रसादजी का सर्वोत्कृष्ट काव्य-ग्रंथ माना जाता है?
A. झरना B. लहर
C. आँसू D. कामायनी

280. खड़ी बोली के किस कवि को द्विवेदी युग के बाद विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियों का जन्मदाता; संक्रान्ति काल का उच्चतम साहित्यकार और रोमांटिक साहित्य का प्रवर्तक माना जाता है?
A. महादेवी वर्मा B. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
C. जयशंकर प्रसाद D. सुमित्रानंदन पंत

281. निम्नलिखित में से किस प्रतिभाशाली कवि की मृत्यु जवानी में ही (50 वर्ष से कम आयु में) हो गई थी?
A. महादेवी वर्मा B. सुमित्रानंदन पंत
C. जयशंकर प्रसाद D. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

282. खड़ी बोली के किस कवि को हिन्दी साहित्य का 'शिव' कहा जाता है?
A. जयशंकर प्रसाद B. महादेवी वर्मा
C. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' D. उपरोक्त में से कोई नहीं

283. ''दिवस का अवसान समीप था,
गगन था कुछ लोहित हो चला।''
यह प्रकृति-चित्रण किस महाकाव्य से है?
A. प्रिय प्रवास B. कामायनी
C. उर्वशी D. साकेत

284. हिन्दी कविता में स्वच्छंद छंद रचना का सूत्रपात करने वाला कवि था–
A. मैथिलीशरण गुप्त
B. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
C. जयशंकर प्रसाद
D. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

285. 'निराला' जी का प्रथम काव्य संग्रह था–
A. आराधना B. अणिमा
C. अर्चना D. अनामिका

286. 'जूही की कली' नामक सुविख्यात कविता किसकी है?
A. सुमित्रानंदन पंत B. भगवती चरण वर्मा
C. महादेवी वर्मा D. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

287. निराला के काव्य में–
A. भाषा ओजपूर्ण है
B. भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है
C. स्वर-लय की प्रधानता है
D. उपरोक्त सभी

288. 'वर दे, वीणावादिनी, वर दे'
यह सरस्वती वंदना किस कवि ने लिखी है?
A. जयशंकर प्रसाद B. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
C. सुमित्रानंदन पंत D. उपरोक्त में कोई नहीं

289. ''नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पग-तल में।
पीयूष स्रोत-सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में।''
नारी के सम्बन्ध में उपर्युक्त उद्गार किस कवि के हैं?
A. सुमित्रानंदन पंत B. मैथिलीशरण गुप्त
C. सोहनलाल द्विवेदी D. जयशंकर प्रसाद

290. नारी के सम्बन्ध में निम्नलिखित उद्गार किस कवि का है–
''वह इष्टदेव के मन्दिर की पूजा-सी
वह दीप-शिखा-सी शान्त, भाव में लीन''
A. नरेन्द्र शर्मा B. सुमित्रानंदन पंत
C. शान्तिप्रिय द्विवेदी D. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

291. 'कुकुरमुत्ता' किस कवि की रचना है?
A. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' B. जयशंकर प्रसाद
C. अज्ञेय D. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

292. निराला जी की निम्नलिखित पंक्तियां उनकी किस कविता से है?
''वह आता–
दो टूक कलेजे के करता
पछताता पथ पर आता।
पेट-पीठ दोनों मिलकर हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक''
A. कृषक B. मजदूर
C. भिक्षुक D. एक भारतीय

293. 'निराला' जी की कविताओं में–
A. छायावाद है B. रहस्यवाद है
C. प्रगतिवाद है D. तीनों का समन्वय है

294. हिन्दी गीति-काव्य की परम्परा डालने वाला/वाली कवि/कवयित्री है—
A. महादेवी वर्मा B. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
C. रामधारी सिंह 'दिनकर' D. अज्ञेय

295. 'निराला' की प्रयोगवादी रचना है—
A. वनवेला B. कुकुरमुत्ता
C. नये पत्ते D. बादल राग

296. 'निराला जी' की 'तुम और मैं' कविता उच्चकोटि की—
A. छायावादी रचना है B. रहस्यवादी रचना है
C. प्रयोगवादी रचना है D. प्रगतिवादी रचना है

297. 'राम की शक्ति पूजा' किसकी कविता है?
A. तुलसीदास B. मैथिलीशरण गुप्त
C. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' D. जयशंकर प्रसाद

298. "दिवसावसान का समय, मेधमय आसमान से उतर रही है : वह सन्ध्या सुन्दरी परी सी धीरे-धीरे।"
प्रकृति सौन्दर्य की ये अनुपम पंक्तियां निराला जी की किस कविता से है?
A. भारती वन्दना B. यामिनी जागो
C. पंचवटी D. सन्ध्या सुंदरी

299. हिन्दी का 'सुकुमार कवि' किसे कहा जाता है?
A. अज्ञेय B. सुमित्रानंदन पंत
C. नरेन्द्र शर्मा D. उपरोक्त में से कोई नहीं

300. पंतजी का महाकाव्य है—
A. शिल्पी B. लोकायतन
C. चिदम्बरा D. गुंजन

उत्तरमाला

आदि काल

1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**
D	D	C	A	A	D	C	B	D	B
11	**12**	**13**	**14**	**15**	**16**	**17**	**18**	**19**	**20**
D	C	B	B	A	B	A	A	A	D
21	**22**	**23**	**24**	**25**	**26**	**27**	**28**	**29**	**30**
B	B	D	C	C	D	B	B	A	D
31	**32**	**33**	**34**	**35**	**36**	**37**	**38**	**39**	**40**
C	C	B	B	B	D	D	C	C	D

भक्ति काल

41	**42**	**43**	**44**	**45**	**46**	**47**	**48**	**49**	**50**
C	D	D	A	B	A	C	C	D	D
51	**52**	**53**	**54**	**55**	**56**	**57**	**58**	**59**	**60**
D	C	D	C	A	D	B	A	A	A
61	**62**	**63**	**64**	**65**	**66**	**67**	**68**	**69**	**70**
D	C	B	A	B	B	C	C	D	C
71	**72**	**73**	**74**	**75**	**76**	**77**	**78**	**79**	**80**
B	B	D	A	B	C	C	B	D	A
81	**82**	**83**	**84**	**85**	**86**	**87**	**88**	**89**	**90**
B	C	C	D	A	C	A	B	C	C
91	**92**	**93**	**94**	**95**	**96**	**97**	**98**	**99**	**100**
B	D	D	A	C	B	B	C	B	C
101	**102**	**103**	**104**	**105**	**106**	**107**	**108**	**109**	**110**
B	B	C	A	C	B	D	D	A	D
111	**112**	**113**	**114**	**115**	**116**	**117**	**118**	**119**	**120**
D	C	C	D	C	D	D	C	C	B
121	**122**	**123**	**124**	**125**					
D	C	C	D	A					

रीति काल

126	**127**	**128**	**129**	**130**	**131**	**132**	**133**	**134**	**135**
B	B	D	C	D	D	A	D	D	A
136	**137**	**138**	**139**	**140**	**141**	**142**	**143**	**144**	**145**
C	C	A	C	D	D	D	D	D	B
146	**147**	**148**	**149**	**150**	**151**	**152**	**153**	**154**	**155**
C	A	D	A	A	D	D	C	A	A
156	**157**	**158**	**159**	**160**	**161**	**162**	**163**	**164**	**165**
D	B	D	C	C	B	C	D	D	A
166	**167**	**168**	**169**	**170**	**171**	**172**	**173**	**174**	**175**
B	B	D	D	B	A	A	C	D	D
176	**177**	**178**	**179**	**180**	**181**	**182**	**183**	**184**	**185**
D	D	A	B	D	C	C	D	D	A
186	**187**	**188**	**189**	**190**	**191**	**192**	**193**	**194**	**195**
A	B	D	A	C	B	B	B	D	D
196	**197**	**198**	**199**	**200**					
C	D	D	D	D					

आधुनिक काल

201	**202**	**203**	**204**	**205**	**206**	**207**	**208**	**209**	**210**
C	D	D	A	D	D	D	D	D	A
211	**212**	**213**	**214**	**215**	**216**	**217**	**218**	**219**	**220**
C	C	D	B	B	C	D	A	B	C
221	**222**	**223**	**224**	**225**	**226**	**227**	**228**	**229**	**230**
A	D	D	B	C	C	D	C	A	A
231	**232**	**233**	**234**	**235**	**236**	**237**	**238**	**239**	**240**
D	C	B	B	B	A	D	C	A	C
241	**242**	**243**	**244**	**245**	**246**	**247**	**248**	**249**	**250**
B	D	D	D	C	C	C	D	A	B
251	**252**	**253**	**254**	**255**	**256**	**257**	**258**	**259**	**260**
A	C	D	B	A	B	A	D	A	C
261	**262**	**263**	**264**	**265**	**266**	**267**	**268**	**269**	**270**
C	B	D	A	C	C	D	D	D	D
271	**272**	**273**	**274**	**275**	**276**	**277**	**278**	**279**	**280**
D	C	D	D	C	D	A	C	D	C
281	**282**	**283**	**284**	**285**	**286**	**287**	**288**	**289**	**290**
C	C	A	D	D	D	D	B	D	D
291	**292**	**293**	**294**	**295**	**296**	**297**	**298**	**299**	**300**
D	C	D	B	D	B	C	D	B	B

❑ ❑ ❑